REFERENCE TO THE REPORTED MURDER OF A PROFESSOR OF J.N.U. UNIVERSITY

DR. M. M. S. SIDDHU (Uttar Pradesh): Mr. Vice-Chairman, today I was shocked to read the news that the body of Dr. Segrora, Associate Professor of the Centre of Spanish Studies of the JNU was found in his bed room. The tragic circumstance which had led to this murder is a matter of grave concern to this House and to everyone. That such a thing should occur in the JNU is still more shocking. How a Professor could be murdered in the campus is beyond my comprehension. The Government, of course, will go into it and investigate and I hope the culprit will be brought to book.

Sir, Dr. Segrora has been living for 20 years in our country and it is unfortunate that though he might have been murdered between the 15th and 16th, his body was only discovered after five days. It does not speak well of the corporate life of a University when the presence of a professor, who lives in the campus, is not known for four or five days till the officers of the Spanish Embassy want to find out why he did not attend one of their functions. It is all the more serious because assaults have been reported in the JNU off and on. I would, therefore, request the Government firstly to see that the security measures are strengthened in the Jawaharlal Nehru University and if the Jawaharlal Nehru University wants any help, the Home Ministry should make it available. Secondly, Sir, someone should go into the question and try to create a better corporate life in the University. Otherwise, Sir, the name of this University, without a good corporate life, will go down and one does not want a prestigious institution like this to have a bed name, Thirdly, I would like ihe Government to find out why such erosion has occurred in the corporate life of this University.

I thank you, Sir, for having given me this opportunity. I would like to request the Government and also the University authorities to look into this matter and I hope they will. Thank you very much. Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ' ZAKARIA) : Mr. Mohanan. Not here. Yes, Mr. Pandey.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—contd.

श्री सुधाकर पाण्डेय : उपसभाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं राजभाषा संसदीय समिति से आग्रह करूंगा कि वह अपनी अन्तरिम रिपोर्ट या प्रारम्भिक रिपोर्ट सरकार को दे दे ताकि इस सम्बन्ध में जो शिथिलता आई है वह दूर हो । आज संसार के लगभग 100 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है और हमारे देश में आज तक हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई नहीं की जाती है जब कि भारत सरकार की नीति के अनुसार भारतीय भाषाएं शिक्षा का माध्यम होनी चाहियें लेकिन कहीं भी क्षेत्रीय भाषाएं माध्यम नहीं हो पाई हैं । हमें इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि वह माध्यम बनें । इस सम्बन्ध में एक-एक करोड़ रुपया प्रत्येक राज्य सरकार को केन्द्र ने दिया था कि हिन्दी का उच्चस्तरीय साहित्य बनाएं और अन्य भारतीय भाषाओं का उच्च स्तरीय साहित्य बनाएं । किन्तु लगता यह है कि उसकी गति कहीं खो गई है । इसकी भी जांच पड़ताल होनी चाहिए और इस बात का पता लगना चाहिये कि अगर गति नहीं आई तो क्यों नहीं आई और उस सम्बन्ध में आगे क्या व्यवस्था की जाए ।

संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा हिन्दी होनी चाहिए । यह मांग बराबर उठती रही है । किन्तु होगी या नहीं होगी कब होगी यह विवादास्पद चीज है । अभी हमारे देश में निर्गुट राष्ट्रों का सम्मेलन हो रहा है । मैं समझ रहा हूं कि भारत की धरती पर

इतना बड़ा आयोजन, अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन कभी भी नहीं हुआ था। इसका श्रेय वर्तमान सरकार को और इन्दिरा जी को जाता है। किन्तु मैंने सुना है कि वहां हिन्दी भाषा नहीं रहेगी। चार भाषाओं की व्यवस्था की गई है। अगर यह सूचना गलत है तो बहुत अच्छी बात है। हिन्दी की व्यवस्था होनी चाहिये। मुझे यह सूचना है कि हिन्दी की व्यवस्था नहीं की गई है। जो प्रतिनिधि आ रहे हैं वे क्या सोचेंगे कि जिस देश की अपनी भाषा नहीं होगी उसकी क्या उन्नति हो सकती है। इसमें भारत के ही नहीं बाहर से भी जो प्रतिनिधि आ रहे हैं उनमें से बहुत से हिन्दी के जानकार हैं। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि सुविधाएं अपने पास हैं, साधन की कमी नहीं है। सेंदन का सशन भी उन दिनों नहीं होगा इसलिये हमारे इन्टरप्रेटर मिल सकते हैं या और जगहों से इन्टरप्रेटर मिल सकते हैं। मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि कम से कम निर्गुट राष्ट्रों के सम्मेलन में हिन्दी की व्यवस्था होनी चाहिये। दूसरे यह कहना चाहता हूं कि हिन्दी के संबंध में जो नियम, मान्यताएं या कानून बने हुए हैं, उनका पालन नहीं हो रहा है, उनका पालन करवाया जाए। मैं मंत्रियों से भी यह निवेदन करूंगा कि व अपने विभाग में देखें कि इसका पालन हो रहा है या नहीं हो रहा है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि जिस भाषा में हम वोट मांगते हैं वह भाषा शासन की, राजकाज की भाषा नहीं होती और सबसे अधिक दुर्भाग्य की बात यह है कि जो हिन्दी राज्य हैं वे हिन्दी राज्य भी हिन्दी पूर्ण रूप से व्यवहार में नहीं लाते। और एक प्रकार की हिन्दी की रचना हो रही है जो बड़ी कठिन मालूम पड़ती है हिन्दी के जानकारों को भी। वास्तव में हिन्दी को अनुवाद की भाषा बना दिया गया है, ट्रांसलेशन की भाषा बना दिया गया है और उस के मूल स्वरुप को नष्ट किया जा रहा है ताकि लोग समझ कि हिन्दी कठिन भाषा है। हिन्दी सरल हो इस की मांग सभी पत्रों में की जाती है, लेकिन हिन्दी तभी बड़ी होगी जब सभी क्षेत्रीय भाषाओं का दर्शन उस के माध्यम से हो। कहीं संस्कृतिनिष्ठ हिन्दी चलेगी, कहीं उर्दू मिश्रित हिन्दी चलेगी, लेकिन वह तभी फलेफूलेगी जब सब का दर्शन उस में हो म अंग्रेजी सरल हो इस की मांग नहीं की जाती। हिन्दी सरल हो यह मांग की जाती है। भाषा सरल या कठिन नहीं होती, भाषा बोधगम्य होनी चाहिए और भाषा बोधगम्य तब होगी जब उस के व्याकरण के अनुसार वह लिखी जाय। शब्दों से भाषा बनती है, किन्तु शब्द ही अर्थ नहीं देते। वाक्यों से अर्थ प्रकट होता है, केवल शब्दों से अर्थ प्रकट नहीं होता। उस के वाक्य उस के नियम के अनुसार हों, शब्द चाहे जहां कहीं से लिए जायं।

बहुत से लोग कहते हैं एक अंग्रेजी ने देश को जोड़ा। जब हम छोटे थे तो बर्मा और सीलोन की ज्योग्राफी भी पढ़ाई जाती थी और हमारा गवर्नर जनरल बर्मा और लंका का भी होता था, किन्तु अंग्रेजी ने बराबर तोड़ा है। लंका आज अलग है, बर्मा आज अलग है। आसाम में जो कुछ हो रहा है मैं समझता हूं कि कोई भारतीय भाषा न होने के कारण ऐसा हो रहा है। अगर भारतीय भाषा होती तो वह जोड़ती क्यों कि हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन की भाषा अंग्रेजी नहीं रही है, हमारे क्रान्तिकारियों की भाषा अंग्रेजी नहीं रही है, सुभाष बोस की भाषा अंग्रेजी नहीं रही, राष्ट्रीयता

[श्री सुधाकर पाण्डेय]

भाषा कभी अंग्रेजी नहीं रही। उस के लिए यदि किसी को व्यामोह है तो वह मोह करे।

कुछ लोग दलील देते हैं कि ज्ञान के लिए अंग्रेजी की आवश्यकता है। मैं ने अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ा है। अंग्रेजी से हम को ज्ञान मिलेगा—किन्तु ज्ञानियों में जो अग्रगण्य हैं उन के लिए अंग्रेजी चाहिए, जन सामान्य के लिए और सामान्य काम के लिए अंग्रेजी की कोई आवश्यकता या अनिवार्यता नहीं है। जहां शासकीय व्यवस्था दो हजार सन तक सब को साक्षर नहीं बना सकेगी, वहां अंग्रेजी पर अनापशनाप धन खर्च करना राष्ट्रीयता के पक्ष में नजर नहीं आता। जो विद्वान होना चाहते हैं वह अंग्रेजी ही क्यों पढ़ते हैं, स्पेनिश पढ़ें, फ्रेंच पढ़ें, रशियन पढ़ें क्यों कि ज्ञान अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से आ रहा है, सभी भाषाओं को पढ़ना चाहिए। मैं किसी भाषा के विरुद्ध नहीं हूं, अंग्रेजी के भी विरुद्ध नहीं हूं, लेकिन जिन को राष्ट्र की एकता सर्वोपरि है उनसे कहना चाहता हूं कि वह राष्ट्रीय एकता को तोड़ने में सहायक हुई है बराबर रष्ट्रीय एकता को तोड़ रही है।

इसी प्रसंग में—प्रणव बाबू बैठे हैं—लेखक की ओर उन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। हम लिखते हैं, लेखक लिखता है तो किताबों को मृत्यु कर के भीतर ले लिया जाता है। किताबों पर मरने के पचास वर्ष बाद कापीराइट खत्म हो जाता है। मैं भारत सरकार से कहना चाहता हूं कि वह और धनों के साथ विद्या धन को न रखें। जिस राज्य में विद्वान नहीं होते, वह बड़ा नहीं होता अगर विक्रमादित्य होंगे तो कालिदास होंगे ही, अकबर होंगे तो तुलसीदास होंगे ही। जितना बड़ा राज्य होता है उस में उतने ही बड़े विद्वान होते हैं, उतने ही बड़े जीवनदृष्टा होते हैं। तो उन को वह करमुक्त करे। दूसरे डैथ ड्यूटी तो हटा ही दे। पचास वर्ष में तो वह पुस्तक जनता की हो जाती है, कोई छाप सकता है, लेकिन भारत सरकार ने उन के ऊपर डैथ ड्यूटी या मृत्यु कर लगाया है। इस से केवल हिन्दी वालों का लाभ नहीं होना है। इस से सभी लेखक वर्ग का लाभ होगा और लेखक वर्ग इस के लिए आप को साधुवाद देगा।

दूसरी बात हमारा शिक्षा मंत्रालय, जो संस्थाएं हैं, शिक्षा संस्थाएं हैं, विश्व-विद्यालय हैं उन को अनुदान देता है, किन्तु आजादी की लड़ाई में या जीवन को उन्नत बनाने में जिन सांस्कृतिक संस्थाओं ने योगदान दिया था उनकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता क्योंकि उन्हें किसी प्रकार का अनुदान उस हिसाब से नहीं मिलता। आज एशियाटिक सोसाइटी की क्या स्थिति है। अखबारों में मैंने पढ़ा। क्या एशियाटिक सोसाइटी भारत के इतिहास से अलग की जा सकती है। अगर ऐशियाटिक सोसाइटी समाप्त हो जाती है तो बड़ी ज्ञान सम्पदा इस तरह से समाप्त हो जायेगी। एनडाउमेंट चेरिटेबिल फंड में ऐसी संस्थाओं का जो धन लगा हुआ है आप को जान कर आश्चर्य होगा कि वह उसको निकाल नहीं सकती, उन्हें करीब साढ़े तीन प्रतिशत ब्याज मिलता है, किन्तु वे अगर उसे फिक्स्ड डिपाजिट में जमा करदें तो वह दस-बारह परसेंट हो जायेगा। और सरकार से मैं आग्रह करूंगा कि

ऐसे एन्डाउमेंट फंड्स जो संस्थाएं कायम कर रही हैं उनके लिए ब्याज की दरों में समानता होनी चाहिये । ब्याज की दर उनके लिए असमान नहीं होनी चाहिए और उन्हें वही ब्याज मिलना चाहिए कि जो फिक्स्ड डिपाजिट में या सावधिक जमा योजना के माध्यम से दिया जाता है ।

श्रीमन्, अभी हम आन्ध्र में गये थे और वारंगल में देखा कि हमारी जो राष्ट्रीय सम्पत्ति है वह बिखरी पड़ी है चारो ओर । आज सरकार ने अपने ऐतिहासिक महत्व के भवनों को खंडहरों को और बिल्डिंग्स को ले लिया है और ऐसा करके बहुत अच्छा किया है, उनको ले लिया है, लेकिन उन में से कुछ की ओर ही हमारा ध्यान जाता है । ताजमहल पर, आगरे की लाल किले की ओर या सारनाथ को ओर ही हमारा ध्यान जाता है, किन्तु जिन लोगों ने देश के इतिहास की रचना की है और स्थापत्य के क्षेत्र में और कला के क्षेत्र में और संस्कृति के क्षेत्र में पद चिन्ह छोड़े हैं वे कई जगहों पर बिखड़े पड़े हैं और उनकी ओर ध्यान नहीं जाता । इसलिए मेरा आग्रह है कि उनको समान रूप से सहायता दी जाय ताकि जो लोग क्षेत्रियता की बात करते हैं कि कुछ स्थान पर लोगों को काफी दिया जाता है और कुछ को नहीं दिया जाता, यह बात न आये । बनारस में बहुत से खंडहर पड़े हैं, इसी तरह से सहस्त्र स्तम्भ मंदिर वारंगल में मैंने देखा . .

SHRI SUSHIL CHAND MOHUNTA (Haryana) : Is he speaking on the* President's Address or is he making a Special Mention? *(Intemiptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : You please continue.

श्री सुधाकर पाण्डेय : इसलिए मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि वह इस ओर ध्यान दे ।

(Intemiptions)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : You can get a job as an interpreter.

श्री सुधाकर पाण्डेय : अंग्रेजी में कोई बोले यह बाधा नहीं है, लेकिन बाधा इस बात की है कि वह अंग्रेजी नहीं जानते और अंग्रेजी में बोलते हैं । गलत अंग्रेजी में बोलते हैं ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया) और ऐसे भी हैं कि जो हिन्दी नहीं जानते और हिन्दी बोलते हैं ।

श्री सुधाकर पाण्डेय : उनको बोलना चाहिये । करत करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : There is nothing against English,

SHRI R. MOHANARANGAM (Tamil Nadu); Mr. Vice-Chairman, Sir, he has pointed out just now that some persons who are not in a position to speak in English, but they will come forward to speak in English though it is wrong English, and that they speak only in English because they want to show to this august House that they know English. I want to esk one question. Now I speak in English not that I am not in a position to speak in my own language Tamil, not that I am not in a position to speak in some other languages. If I speak in Tamil, nobody can translate it into English. But you have got some facilities. Whenever anybody speaks in any other language, that will be translated into Hindi. Is there any facility that if anybody speaks in any other language, that will be automatically translated into my language ? And they have that much of

[Shri R. Mohanarangen]

facility. But we are branded as second grade citizens in this country, why should he unnecessarily talk that Hindi is the first class language, and also the language of the nation ? I have not got the facilities. Let him not talk like that hereafter that we speak in English. We speak in English because we have no opportunity, we have no choice to speak in our languages. If I speak in Tamil, Sir, no body can translate it into English because we speak perfect Tamil, chaste Tamil.

SHRI MANUBHAI PATEL: Sir. . .

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): That is all right.

SHRI MANUBHAI PATEL : Facilities should be extended for translating all the regional languages as a rule. That is, if somebody informs earlier, those facilities should be extended. I am also for national language. But I do believe that we should give preference to our regional language and national language rather than English.. . *(Interruptions).*

SHRI R. MOHANARANGAM : How do you say that English is a foreign language when you have accepted in the Indian Constitution that Anglo Indian Community is one of the Indian Communities. English as one of the languages? English is the mother tongue of the Anglo-Indian community and it should also be treated as one of the Indian languages.

SHRl MANUBHAI PATEL : What I am saying is that our first language is the regional language, the mother tongue, second language is the national lang-guage and the third is either English or Russian or French or any other language Of the world. What I say is that our national language or link language will be Hindi. (Interruptions).

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : I think we have had enough olf this.

SHRI R. MOHANARANGAM : For the lasl 35 years this problem could not t* solvtd. It is a complicated problem. Even the political pundits of this country have never treated this issue as an important issue. *(Interruptions).*

SHRl R. RAMAKRISHNAN (Tamil Nadu); There should be no Hindi fanaticism. There should be no Hindi imposition which will never be accepted by the South. Particularly by Tamil Nadu. So, let the message be very clear, *(ln-terruptions)* .

SHRI R. MOHANARANGAM : By the time I get an opportunity to speak on the President's Address, I will be a second class citizen. *(Interruptions).* If Shri Sitaram Kesri speaks in Hindi, because he cannot speak in English, I can understand it. But if our Finance Minister speaks in Hindi, I will not accept it because he is a master in English language. *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) ; Why do you bring in Mr. Kesri ? I ask you, how is he relevant here ? पाण्डेय जी आप अपनी इस बात को छोड़ दीजिए दूसरी बात पर आइये ।

श्री सुध.कर पाण्डेय : हम लोग हिन्दी किसी पर लादना नहीं चाहते और हम और भाषाओं की हिन्दी से कम कद्र नहीं करते । किन्तु अगर हिन्दी पर कोई लादना चाहता है तो उसको हिन्दी पर लादने नहीं दिया जायेगा । भाषा सहनशीलता सिखाती है और हम हिन्दी में वहां ब्राडकास्ट नहीं कर सकते । तमिल में हम अपने यहां ब्राडकास्ट कर सकते हैं, कोई आपत्ति नहीं । हम अपने बच्चे को तमिल और तेलगू भी सिखा रहे हैं हमें कोई आपत्ति नहीं । किन्तु राजनीतिक वोट पाने के लालच में राष्ट्र को तोड़ने का षड़यंत्र बर्दास्त नहीं किया जा सकता और हो सकता है

इसकी प्रतिक्रिया हो । क्योंकि हरचीज में टांग अड़ाई जाती है । कुछ लोग दक्षिण का अपने को ठेकेदार समझते है, कुछ लोग अपने को उत्तर में ठेकेदार समझते हैं, पश्चिम में अपने को ठेकेदार समझते हैं, किन्तु जो सामान्य जनता है उसको इन से कुछ लाभ नहीं होता । क्या आप ने अपने यहां सभी को तमिल भाषा सिखाई है ... (व्यवधान) मैं इनको विश्वास दिलाना चाहता हूं हिन्दी जगत को ओर से तेलगू के प्रति, कन्नड़ के प्रति, तमिल के प्रति हमें घोर आस्था है । इसमें मुझे कोई संदेह नहीं अगर ये भाषाएं एक मात्र राष्ट्र भाषा हो सकें तो आप बना लीजिए हम उसे स्वीकार करेंगे । किन्तु आप हिन्दी के प्रगति को नहीं रोकिये, किसी भारतीय भाषा की प्रगति को नहीं रोकिये ।

मैं अधिक समय नहीं लेना चाहता। मैं आप के माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि हिन्दी का प्रश्न राष्ट्रीयता का प्रश्न है और सब दलों को एक साथ होकर इसमें सोचना चाहिये और विचार करना चाहिए । इसे किसी सम्प्रदाय, क्षेत्र और भाषा का प्रश्न नहीं बनाना चाहिये । क्योंकि हिन्दी से देश अगर टूटता है तब देश से हिन्दी चली जाए हमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होगी । गांधी जी ने कहा था हिन्दी जोड़ती है, सुभाष बाबू ने कहा था हिन्दी जोड़ती है, दक्षिण के राजगोपालाचारी ने कहा था हिन्दी जोड़ती है

SHRI R. MOHANARANGAM: Shri Rajagopalachari stated that Hindi is responsible for the break up of the entire country, that there will not be any integration or unification of the country if Hindi is imposed as the sole official language. *{Interruptions).*

श्री सैयद रहमत अली (आन्ध्र प्रदेश) : यह हिन्दी को फारेन लैंग्वेज कहने वाले हिन्दी में सिनेमा क्यों देखते हैं, हिन्दी में गाने क्यों सुनते हैं. . . (व्यवधान)

SHRI MANUBHAI PATEL : Shri Subramanyam Bharti wrote beautiful poems in Hindi.

SHRI R. MOHANARANGAM; There may be exceptions.

SHRl MANUBHAI PATEL : Exceptions prove the rule. *{Interruptions).*

SHRl R. MOHANARANGAM: It is a political theory. *(Interruptions).* If you just switch over the TV at 6.30 p.m. they start something in Hindi which we are not able to understand. And from 8.30 to 10.30 p.m. we have nothing but Hindi. Do you mean to say that we have reached the stage or have the equal status as Hindi speaking people have and also the facilities we have. We in the South feel that we are the second grade citizens of this country. When I travel by air from Madras to Madurai, both these places are in Tamil Nadu, the airhostess makes the announcement only in English and Hindi and not in Tamil, saying that all the passengers are requested to fasten their belts. This announcement is made only in English and Hindi and not in Tamil. Suppose, in Hindi speaking areas, say, in Uttar Pradesh, when a passenger travels by air between two places of this State will be tolerated if an announcement is made in Tamil that all passengers are requested to fasten their belts ? Nobody will tolerate that. But we have been tolerating this all these years.

(Interrupions)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : We have had enough of this.

SHRI R. MOHANARANGAM: Why should he refer to the language issue ?

(Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : Mr. Manubhai Patel, you ara responsible for this. You have been adding fuel to the fire. It is Mr. Patel who has been putting oil into the fire all the time.

{Interruptions)

SHRI R. MOHANARANGAM: One thing I would like to make clear here. We are for the unity of the country. We are second to none in this. I am an Indian. But I am not a Hindi man.

श्री सुधाकर पाण्डेय : उपसभापति जी, जैसा मैंने कहा, हमको तमिल से प्रेम है . . . (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया) : अब आप दूसरे पाइन्ट पर जाइये । इस पर तो उनका फिर रिएक्शन हो जाएगा ।

श्री सुधाकर पाण्डेय : इनके डराने से हम बारबार डरते रहे तो हमें सब कुछ छोड़ देना पड़ेगा ।

SHRI R. MOHANARANGAM: Sir, let this House agree that within at least another fifty years, a person from South India will become the Prime Minister of India. Nobody will agree to that. Only when such a thing happens, I can say this country is one.

SHRI MANUBHAI PATEL : This can happen in five or ten years.

SHRI R. MOHANARANGAM: We have that much /eeling. We have real feelings. We feel that we are the second grade citizens in this country. You do not know our feelings. You do not know our sentiments.

SHRi MANUBHAI PATEL ; This is not the feeling of all the people in Tamil Nadu. This may be your individual feeling.

SHRI R. MOHANARANGAM: Yous do not know. How many times you have gone to Tamil Nadu ?

SHRI MANUBHAI PATEL ; So many times.

SHRI R. MOHANARANGAM: You do not know our feelings.

{Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : Order please. I do not think, we can go on like this. One ean understand the feelings of some hon. Members. That is why, I did not interrupt at that time. But if this thing continues like this, then we will not be able to carry on with the discussion.

SHRI R. MOHANARANGAM: It is only because of Mrs. Gandhi, we are here. Otherwise, we will not be here. She is the only leader. We do not believe in any other person.

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया) : पाण्डेय जी अब आप समाप्त कीजिए ।

श्री सुधाकर पाण्डेय : मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि श्रीमती इन्दिरा गांधी पर इनको विश्वास हो गया है । इंदिरा जी ने लोक सभा में बहुत स्पष्ट कहा कि इनकी भाषा नीति राष्ट्र की भाषा नीति नहीं है . . . . (व्यवधान) ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : अगला प्रधान मंत्री दक्षिण भारत से होने वाला है ।

श्री सुधाकर पाण्डेय : मैं तो इसका स्वागत करूंगा ।

(Interruptions)

श्री सुधाकर पाण्डेय : श्रीमन् मैं इस प्रश्न को यहीं छोड़ देता हूं क्योंकि सभी मित्रों की यही सलाह है। किन्तु मैं एक प्रश्न यह भी उठाना चाहता हूं कि आसाम और पंजाब में जो अधोगति हुई है उसके लिए सारा राष्ट्र जिम्मेवार है। यह किसी एक दल की जिम्मेवारी नहीं है। यह वास्तव में सांस्कृतिक पराभाव है और यह सांस्कृतिक पराभाव इसलिए हुआ है कि हम सारे राष्ट्र की सांस्कृतिक झंकृति को स्वर अभी तक नहीं दे पाये हैं। यह सिर्फ कांग्रेस का प्रश्न नहीं है, यह प्रश्न सभी का है। इसलिए मैं राजनैतिक दलों से यह अनुरोध करूंगा कि वे सोचें उनके पीछे कोई राजनैतिक संस्कृति है या नहीं, जनतंत्र की कोई संस्कृति है या नहीं सभी दलों के घोषणा-पत्रों में संस्कृत के बारे में कभी कोई चर्चा नहीं होती है।

अन्त में मैं राष्ट्रपति जी को बधाई देता हूं कि बहुत वर्षों के बाद उन्होंने हिन्दी में भाषण पढ़ा। लेकिन मैं यह अनुरोध करूंगा कि उनके भाषण में बहुत से अंग्रेजी के शब्द दिये गये हैं और उनको देवनागरी लिपि में नहीं दिया गया है।

यह सरकार का दोष नहीं हो सकता है, राष्ट्रपति का दोष नहीं हो सकता है, यह अनुवाद करने वालों का दोष है। मैं यह चाहूंगा कि ऐसी छोटी मोटी भूलें भविष्य में न हों ताकि अंग्रेजी की रोमन लिपि जो नहीं जानते हैं वे भी उसको समझ सकें।

इन शब्दों के साथ मैं राष्पति जी के अभिभाषण पर जो मौर्य जी का प्रस्ताव है उसका समर्थन करता हूं।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : श्रीमन् अभी जो विवाद हुआ, मैं उससे परे हट कर पाण्डेय जी ने जो हिम्मत दिखाई, सरकार को बहुत सुझाव देने की, मैं उनका समर्थन करता हूं और उनके साहस का एक प्रकार से अभिनन्दन करता हूं। लेकिन दुख यह है कि कांग्रेस सरकार की पार्टी को इस अभिभाषण पर भाषण करने के लिए श्री मोर्य जी और बहन मार्ग्रेट आल्वा, दो नए ही व्यक्ति मिले जो अभी हाल ही में कांग्रेस (ई) में भर्ती हुए हैं। यह बात ठीक है क्योंकि कहावत भी है कि कि नया मुल्ला ज्यादा जोर से अजान देता है। मोर्य जी और बहन मार्ग्रेट आल्वा ने भी काफी दिलोजान लगाकर सरकार की प्रशंसा करने की कोशिश की। लेकिन मुश्किल यह है कि मोर्य जी बड़े विद्वान होने के बाद भी कभी कभी ऐसे बहक जाते हैं जिससे मुझे लगता है कि शायद वे अतना बुढ़ापा, जवानी छोड़कर बचपने में आ गये हैं। आपने कहा कि भारतीय जनता पार्टी और जनता पार्टी के जिन लोगों ने राष्ट्रपति के अभिभाषण का बहिष्कार किया, उन्होंने राष्ट्रपति का अपमान किया। साथ ही साथ उन्होने यह भी कहा कि इन लोगों ने संविधान का भी अपमान किया। इसके साथ उन्होंने माननीय अम्बेडकर जी के एक वक्तव्य का भी हवाला दिया मैं अपने कांग्रेस में नये भर्ती हुए मित्रों से पूछना चाहता हूं कि... (व्यवधान)...

आप पहले यहां बैठे थे, अब वहां हैं। आप आते जाते रहते हैं यह बात सच है। यह तो आपकी गली-कूचों में निकलने की आदत पुरानी है हुजूर ... (व्यवधान) आप आते जाते हैं। लेकिन कब जाते हैं, और कब नहीं जाते हैं, मैं समझता हूं कि हमारे सदन के नेता को भी इसका पता नहीं लगता कि कब जा रहे हैं। इस हफ्ते यहां हैं तो अगले हफ्ते पता नहीं कब वापस आ जांय। मेरी सिफारिश है और अगर आप गलत न मानें तो कहूं कि यदि आप इनको और अधिक जिम्मेदारी दे दें तो मोर्य जी

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

और बहन मार्ग्रेट अल्वा वहीं टिकी रहेंगी वरना खतरा है कि वे फिर इधर न आ जायं।

मैं आप से पूछना चाहता हूं कि संविधान की कौन सी धारा के मुताबिक आपने यह कहा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण का बहिष्कार करने से राष्ट्रपति का अपमान हुआ। संविधान की धारा 79 के अनुसार राष्ट्रपति संसद का एक अंग है। संविधान के अनुसार पार्लियामेन्ट, दोनों सदनों और राष्ट्रपति को मिलाकर बनता है। इसलिए हमें पूरा अधिकार है कि हम अपना रोष राष्ट्रपति के सामने प्रकट करें। लेकिन हम अनुचित परम्परा नहीं डालना चाहते हैं। यदि पहले वाली बात होती और शायद मोर्य जी यह किसी जमाने में कर चुके हैं। मुझे याद है

SHRI BUDDHA PRIYA MAURYA: Never in my life. I have been more agita-ed than you. But I never boycotted tlie Presidential Address in my life.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: आपने मेरा जुमला पूरा हो नहीं होने दिया। मैं यह कह रहा हूं और आपने ही खुद कह दिया कि मैं एक बड़ा एजीटेटर हूं। मैं एजीटेटर हूं नहीं, मैं शरीफ आदमी हूं। आप एक एजीटेटर हैं इसके लिये मैं आपको बधाई देता हूं। लेकिन यदि कुछ लोग, पहले जैसे थे, वे होते तो शायद वे नारा लगा देते, झगड़ा कर देते। हम लोगों ने सज्जनता के साथ कहा कि असम के प्रश्न पर राष्ट्रपति जी अपने कर्त्तव्य को पूरा नहीं कर सके। मैं बड़े खेद के साथ आपके माध्यम से कहता हूं कि राष्ट्रपति महोदय इस प्रश्न पर अपने कर्त्तव्य को पूरा नहीं कर सके। वहां चुनाव आयोग ने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया। चुनाव आयोग सरकार की चेरी बन कर रह गई। चुनाव आयोग को चाहिए था कि वह खुद निश्चय करते कि आज आसाम में चुनाव होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए। लेकिन राष्ट्रपति के पद पर बैठे हुए किसी व्यक्ति से यह हम अपेक्षा नहीं कर सकते। मैं बड़ी नम्रता के साथ श्रीमन् राष्ट्रपति महोदय के चरणों में निवेदन करना चाहता हूं कि आसाम के सवाल पर आप भी चूक गये। यह धृष्टता नहीं करूंगा, अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया। कर्त्तव्य का पालन हर राष्ट्रपति करता है जिस तरह से वह देखता है। लेकिन आसाम में गवर्नर राज्य था। गवर्नर राष्ट्रपति महोदय, आपका प्रतिनिधि है। आप अपने प्रतिनिधि का क्या प्रतिवेदन है, क्या रिपोर्ट है उसको देखते और उसको सही आंकते और उसको सही आंक कर आप सरकार को सलाह देते कि वर्तमान स्थिति में चुनाव नहीं होने चाहिये श्रीमन्, एक दुख हो रहा है। दुख यह है कि इस सारे भाषण में दो शब्द भी सरकार की ओर से राष्ट्रपति महोदय के मुख से नहीं कहे गये कि जो हजारों लोग वहां मारे गये हैं उनके प्रति कोई सहानुभूति प्रकट की गई है। इसको क्या माना जाए। राष्ट्रपति की भूल माना जाए, मंत्रि-मण्डल की भूल माना जाए या सरकार की धृष्टता मानी जाए। मैं सरकार की धृष्टता मानता हूं। राष्ट्रपति का भाषण राष्ट्रपति नहीं लिखते उसमें संशोधन कर सकते हैं? दो दो यह भी कह देते प्रारम्भ में कि जो खून-खच्चर हुआ है उस पर मुझे दुख है। जो सदन में हमने कल किया राष्ट्रपति महोदय के मुख से सरकार ने यह क्यों नहीं कहलवाया। श्रीमन्, इसका एक कारण है। आज सरकार सरकार नहीं रही। मुझे ताज्जुब है कि राष्ट्रपति जी जो सरकार की तरफ से बोल रहे हैं। सरकार तो है ही नहीं न दूरबीन से देखने से पता लगेगा न खुर्दबीन देखने से

पता लगेगा कि सरकार कहां है। हां शासन का ढांचा कर्मचारी, अधिकारी, पदाधिकारी हैं लेकिन सरकार जिसको कहते हैं, दैट वर्क्स जो काम करती है अगर मैं खुर्द बीन लगा कर देखूं तो भी दिखायी नहीं देगी। सरकार क्या होती है? सरकार जनता की प्रतिनिधि होती है। आज सरकार और कांग्रेस दल में अन्तर मिट गया है। जो बारीक रेखा सरकार और दल के बीच में होनी चाहिये वह मिटा दी गई है जान-बूझ कर मिटाई गई है। दुख यह है कि दल और सरकार का खानदान का अन्तर मिटा दिया गया है, रेखा भी मिटा दी गई है। इसलिए मैं पूछना चाहता हूं। यह किसकी सरकार की गतिविधि का जिक्र है, यह भविष्य की सरकार के कारनामों का जिक्र है, एक नान-एग्जिस्टेंट जो सरकार है ही नहीं, उसका ब्यौरा आप बता रहे हैं। इसका मैं उदाहरण देना चाहता हूं। सरकार और व्यक्ति, सरकार और दल का अन्तर मिट चुका है। सरकार की कोई दिशा रही नहीं, वह दिशाविहीन हो गई है, खोखली दिख रही है। श्रीमन्, उसका उदाहरण है। मैं बधाई देता हूं अपने फाइनेंस मिनिस्टर को कि वह टिके हुए हैं। बातचीत में, गपशप में वह फरमा रहे थे कि फाइनेंस मिनिस्टर का मारटल रेट जो है वह बहुत ज्यादा है। बिलकुल ठीक है आज प्रातः भी प्रश्न था कि भारत में बच्चों की मृत्यु बहुत होती है। मुझे डर लग रहा था कि कहीं कल परसों में फाइनेंस मिनिस्टर का भी सफाया न कर दिया जाए। मुझे खुशी है इस बात की। वित्त मंत्री महोदय हमारे सदन के सदस्य हैं तो कम से कम बचे रहे हैं। 36 महीने 1980 के बाद हुए हैं इन 36 महीनों में 30 बार मंत्रि-मण्डल में हेरफेर की गई है पूरे 30 बार। 6 बार बड़े परिवर्तन किये गये है। रेलवे के एक्सीडेंट तो हमारे कितने हो चुके हैं। पांच मंत्री बदल चुके हैं। जिस सरकार का यह हाल हो क्या उस सरकार को सरकार कहा जाए? कहा जाए कि उसकी दिशा है, उसकी कोई नीति है? मैं कहूंगा इससे बड़ी काव्य की रचना कोई नहीं हो सकती। क्या इस पुस्तक को सरकार की नीति का वक्तव्य कहा जाए, नीति का वक्तव्य है ही नहीं। लेकिन एक बात जरूर है कि इस सरकार में एक ईमानदारी है। वह अपने कर्मचारियों को, मैं कर्मचारी कह रहा हूं क्योंकि आज जितने मंत्रि-मण्डल में बैठे हुए हैं उन में से एक दो को छोड़ कर किसी की कर्मचारी से बढ़ कर किसी की हैसियत नहीं है, दे आर आल इम्पलाइज।

मंत्री नहीं वे कर्मचारी बन गये। अपने कर्मचारियों पर जब सरकार खुश हो जाए नजरे इनायत हो जाए तो इनाम जरूर देती है। एक महोदय, नाम मैं नहीं लूंगा, समझने वाले समझ जायेंगे, उन्होने हरियाणा के अन्दर कुछ करतब दिखलाया। जमूरे ने जादू के जोर से एक सरकार बना दी। आप के राज्य में महाराष्ट्र में गिरती गिरती सरकार को बचाकर एक नया शोर खड़ा कर दिया। उसके इनाम में पदोन्नति हो गई ऐसे ही दूसरे महोदय ने दिल्ली में चुनाव का करतब दिखलाया, उनकी भी पदोन्नति हो गयी। जहां एक व्यक्ति और एक खानदान के एक किसी विशेष मुद्दे पर अच्छे कारनामे पर तरक्की की जाय, घटाया जाय बढ़ाया जाय मैं ऐसी सरकार को सरकार नहीं कहता। उस सरकार को कोई नीति, दिशा नहीं मानता। मानने योग्य भी नहीं है। मैं पूछना चाहता हूं कि जो आज का मंत्री मण्डल है क्या वह कांग्रेस पार्टी में से सर्वश्रेठ लोगों से चुना हुआ मंत्रीमंडल है। नहीं, मैं जानता हूं कि कांग्रेस दल के अन्दर जो आज मंत्री-मण्डल में लोग बैठ हैं चाहे नीचे हों या

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

ऊपर हों उनसे बहुत बहुत योग्य व्यक्ति मौजूद हैं । अगर सरकार की कोई नीति होती, दिशा होती, कार्य करने की क्षमता होती या कार्य करने की इच्छा होती तो उन विद्वान लोगों को योग्य लोगों को चुना जाना चाहिए था। लेकिन आज चुना किन को जाता है? कांग्रेस के भीतर, योग्यता कसौटी नहीं है । कर्मण्यता कसौटी नहीं है, क्षमता कसौटी नहीं है। कसौटी एक है कौन जादू का करतब कर सकता है । कौन ज्यादा सिर झुका सकता है, कौन लाकर घर के खजाने को भर सकता है । जिस सरकार की यह नीति और जिसका यह चलन हो उसको मैं सरकार कह दूं उसकी नीति को नीति का वक्तव्य कह दूं मैं इसके लिए बिलकुल तैयार नहीं हूं। लेकिन उसका नतीजा निकल रहा है। नतीजा क्या निकल रहा है ? नतीजा यह निकल रहा है कि सरकार और दल के बीच में कोई रेखा नहीं रही, दल और और व्यक्ति के बीच में, खानदान के बीच में रेखा नहीं रह गई है । तो राजनीतिज्ञों की एक नयी पोध हो रही है । जिनके सामने न कोई आदर्श है जिनके सामने न कोई लक्ष्य है । जो अपने चरित्र की चिंता नहीं करना चाहते हैं ऐसी पोध पैदा हो रही है । जिनका एक ही लक्ष्य है कि किसी प्रकार से और जितने भी असामाजिक तत्व हैं उनके सहारे से राजनीति में जिंदा रहा जाय । राजनीति में जिंदा रहने का जब मैं उल्लेख कर रहा हूं तो मेरा यह अर्थ कदापि नहीं है कि वे सिद्धांतों के ऊपर जिंदा हैं, नीतियों के ऊपर जिंदा हैं लेकिन जिंदा हैं केवल पैसे कमाने के लिए, केवल अपने शरीर की रक्षा करने के लिए । इसका जिम्मेदार कौन है । मुझे दुख है कि राष्ट्रपति महोदय आपने इस बात का उल्लेख नहीं किया । अगर आप अपने राष्ट्रपति के भाषण में उल्लेख करते कि आज राजनीति का स्तर गिर गया है, राजनेता बिगड़ गये हैं, आदर्श से च्युत हो गये हैं तो मैं कहता कि आपने अपने भाषण में देश के लिए कोई दिशा दी है । लेकिन दिशा देने का प्रश्न ही नहीं है जब दिशा विहीन सरकार है । दिशा कौन देगा । इसलिए महोदय कुछ बात मैं और कहना चाहता हूं मेरे उधर के साथी नाराज न हों । जब मैंने कहा कि सरकार और दल के बीच की रेखा बिगड़ गयी है, जब मैंने कहा कि दल और व्यक्ति के बीच की रेखा चली गयी है तो उसके उदाहरण के रूप में केवल कह रहा हूं इसमें सरकार का सीधा संबंध नहीं है एक तिरछा संबंध है आज ये ही प्रधान मंत्री हैं और वही दल की नेता भी हैं, अध्यक्ष भी हैं । यह क्या सरकार और दल के बीच के अंदर रेखा है ? जी नहीं । बूढ़े महापुरुष को जो राजनीति में गुरु समान हैं उनको काम सौंप दिया गया और जो नाम दिया गया वर्किंग प्रेजीडेंट का वह भी आपने नहीं दिया वह जो ऊपर बैठे पत्रकार हैं उन्होंने दिया है ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया) : इसका प्रेजीडेंशियल एड्रेस से क्या ताल्लुक है ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मतलब है, यह मैं बता रहा हूं । सरकार और व्यक्ति और दल के बीच में रेखा मिट गयी है और व्यक्ति और दल के बीच की रेखा मिट गयी है, यह मैं कह रहा हूं दिशा विहीन हो गयी है ।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : यह इन बेचारों का जीवन है । ये इसी ख्याल में जिंदा रहते हैं, इसी ख्याल में इनका जीवन रहता है ? इनके मस्तिष्क . . . (व्यवधान) कहने दीजिए ।

श्री हंसराज भारद्वाज : (मध्य प्रदेश) : क्या आपके बाप का भी नाम लिया, आपकी मां का भी नाम लिया । यह भी बता दीजिए ।...... (व्यवधान)

3 PM

आपकी पार्टी के नेता के मां का या बाप का किसी को पता नहीं है । आप हमारी पार्टी की बात कर रहे हैं । हमारी पार्टी के नेता के बाप, दादा, परदादा और उसके बच्चों को सारी दुनिया जानती है ।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : आपका क्या है... (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं कह रहा हूं हुजूर कि आज सरकार और दल के बीच में और दल और व्यक्ति के बीच में ... (व्यवधान)

श्री हंसराज भारद्वाज : आपकी पार्टी के नेता के बच्चे नहीं हैं, खानदान नहीं है, हमारी पार्टी के नेता का खानदान है।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : आपको शर्म आनी चाहिए ... (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैंने खानदान की बात ही नहीं कही है ।... (व्यवधान) क्या बोलते हो ... (व्यवधान) मैं तो यह कह रहा हूं कि... (व्यवधान)

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : हम आपसे लम्बी जबान रखते हैं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैंने खानदान के बारे में कहा ही नहीं है ।

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Tell me your leader's father's name. I will accept. Tell me about any leader of BJP whose father's name is known.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Have you finished, Mr. Mathur?

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: No.

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: lean challenge whether you can tell Mr. Vajpayee's father's name. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA): Order, please. *(Interruptions)* Order, please.

श्री हंसराज भारद्वाज : किसने आपको बोलना सिखाया है ? पार्लियामेंट के अन्दर आप क्या बोलते हैं ? आपकी पार्टी के खानदान का किसी को पता ही नहीं है ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप तो मुझे पहचान रहे हैं ना ।... (व्यवधान) मैंने खानदान कहा ही नहीं है। (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया): अब आप बैठिये ।

श्री लाखन सिंह (उत्तर प्रदेश) : आप ऊपर खड़े होकर बोलिए ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मैंने खानदान की बात नहीं कही है । ... (व्यवधान) मैंने कहा है कि ... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया): माथुर साहब मेरी आपसे ... (व्यवधान)

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : हमें इतना नीचे गिरा दें ...(व्यवधान आपका... (व्यवधान)

श्री हंसराज भारद्वाज : हम गोलधरकर के पैर नहीं छूयेंगे ।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : हम आपसे लम्बी जुबान रखते हैं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : वह तो दिखाई दे रहा है ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया) : आप जरा मुझ से भी सहयोग कीजिये । मेरी आपसे इतनी विनती है । आपने शुरू से ही कुछ ऐसी सतह ली, पहले तो मोर्य जी पर अटैक किया और फिर मारग्रेट पर । जरा इसको ...(व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : यह तो मैंने कहा ही नहीं है ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया) : देखिये माथुर साहब, आप बहुत अच्छा बोलते हैं, आपकी आवाज में भी बड़ी मधुरता है । लोग आपको सुनना चाहते हैं, तो जरा कुछ ऐसे सीरियस लेवल से बात कीजिये ताकि उसका कुछ प्रभाव भी पड़े ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : प्रभाव तो पड़ रहा है, चाहे उलटा पड़ रहा है।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया): आप लेवल के नीचे मत आइये ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: लेवल तो मैंने गिराया नही है । इनको गलत फहमी हो गई है।

मैंने तो सिर्फ इतना कहा था कि सरकार और दल के बीच की रेखा मिट गई है और परिवार और दल के बीच की रेखा मिट गई है । आज की सरकार के बारे में मेरा यह आकलन है । इसमें खानदान कहां से आ गया साहब !

श्री हंसराज भारद्वाज : हमारे नेता के परिवार को तो देश ने माना है, आपने तो अभी जन्म लिया है ... (व्यवधान)

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : राष्ट्रपति के अभि-भाषण में प्राइम मिनिस्टर के संगठन की बात कहां से आ गई । राष्ट्रपति के अभिभाषण में गलियों की बात कहां से आ गई । ...(व्यवधान) आपको शर्म आनी चाहिए ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैंने कह दिया कि इस गली से उस गली में... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया): आर्डर प्लीज । माथुर साहब आप जरा पर्सनल अटैक को ... (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मोर्य जी तो बहुत जोर से भड़क उठे साहब । मैंने कहा कि इस गली से उस गली ... इस गैलरी को गली कहते हैं, आप क्या बात करते हो । मेरी बात को नहीं समझते ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया) : माथुर साहब आप सतह को ऊंचा कीजिये ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं इस पर खड़ा हो कर बोलूं ।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : हम भी जबान रखते हैं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप जबान जरूर रखते हैं ।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य : आर० एस० एस० और जनसंघ की हरकतें बताने लगूं ।...

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : श्रीमन्...

SHRI BUDDHA PRIYA MAURYA : . You leave it I would not tolerate it. If you go out of the way, 1 would not tolerate it. What has this President's Address got to do with it? *(.Interruptions)*

SHRi JAGDISH PRASHAD MATHUR; I have the right because the Prime Minister and the Congress (I) President are one.

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ \ Go and see your face in the mirror.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर :: वह तो रोज देखता हूं ।

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: tra) : Control these people also.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : Please do not tell me. I have been tolerating for some time. You must realise that Mr. Mathur began his speech with a personal attack against the Mover and Seconder, which I felt was not in good taste. It was an attack on their integrity.

SHRi JAGDISH PRASAD MATHUR: No, sir.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : You said that he has moved it because he wants something.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: No, no. I said he should be given something.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) : I think the whole thing began on rather an unfortunate tone. And I would request Mr. Mathur now to leave aside all these things. There are many serious matters mentioned in the President's Address. You dilate on them.

श्री अब्दुल रहमान शेख (उत्तरप्रदेश) : बोलने दीजिये, इन्टरप्शन बहुत ज्यादा है ।

उपसभाध्यक्ष (डा० रफीक जकरीया): आप छेड़ करेंगे, फिर कहेंगे कि इन्टरप्शन ज्यादा है । आप मौर्य जी को छोड़ दीजिये ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मोर्य जी मेरे मित्र हैं, उन्हें कैसे छोड़ दूं । पर्सनल नाराजी हो तो मैं क्षमा चाहता हूं । जब मैंने उनकी बात की तो वह हंस रहे थे, मजा ले रहे थे ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. RAFIQ ZAKARIA) Because you went on in that tone all the time.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैंने यह बात कही कि राजनेताओं की एक नयी पोध बन गयी है जिसने बहुत सी बुराइयां पैदा की हैं, जिस की तरफ सरकार ने राष्ट्रपति के भाषण में कुछ नहीं कहा । मैं धर्मयुग का एक लेख पढ रहा हूं, यद्यपि इस विषय में हम सब लोगों की व्यक्तिगत जानकारी है —

"डाकू उन्मूलन अभियान—पुलिस ने मुठभेड़ में 7 डाकू मार गिराये । जब उनकी तलाशी ली गयी, तो एक डाकू के पास से उत्तर प्रदेश सरकार के एक राज्यमंत्री का उसके नाम लिखा पत्र बरामद किया गया . . मध्य प्रदेश पुलिस ने मुरैना में डकैती की योजना बनाते समय एक डाकू दल को गिरफ्तार कर लिया । तलाशी के दौरान एक सदस्य के पास उत्तर प्रदेश सरकार के एक मंत्री का पत्र भी मिला ।"

एक माननीय सदस्य : सब लिखवाते हैं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मेरा कहना यह है कि आज जो ला एण्ड आर्डर सिचुएशन बिगड़ी है उसके बारे में राष्ट्रपति महोदय ने कुछ नहीं कहा और न उसके कारणों पर प्रकाश डाला जो अत्यंत आवश्यक था । मैं समझता हूं कि आज राजनैतिक नेता, राजनैतिक कार्यकर्त्ता और जो असामाजिक तत्व हैं उनके बीच

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

में ऐसा गठबंधन बन गया है, देश को रसातल की ओर ले जाने वाला है। ले गया है, ले जायेगा। मैं समझता हूं कि राष्ट्रपति महोदय के माध्यम से सरकार इस विषय में कुछ कहेगी, लेकिन दुःख है कि कुछ नहीं कहा गया। तथ्य बड़े कड़वे हैं। ला एण्ड आर्डर सिचुएशन इतनी बिगड़ी है कि पुलिस ने अपनी रिपोर्ट लिखने के साथ जो उनके जर्नल थे उन को छापना बन्द कर दिया है। पुलिस की ओर से 'क्राइम इन इंडिया' नाम की पुस्तक वार्षिक पुस्तिका छापी जाती थी। पुलिस रिसर्च ऐंड डवलपमेंट ब्यूरों की तरफ से वह छपती थी लेकिन 1978 की रिपोर्ट 1979 में आयी, उस के बाद कोई रिपोर्ट छापी ही नहीं गयी। मैं पूछना चहता हूं सरकार से कि इस बात पर क्यों पर्दा डाला गया है और क्यो ला-एन्ड आर्डर की जो सेचुएशन खराब हो रही है और क्राइम बढ़ रहे हैं अभिभाषण में उन का उल्लख नहीं किया गया। कारण क्या है।? मैं जाने माने लोगों की बात कहता हूं। एक बहुत बड़े क्रिमिनोलोजिस्ट हैं Bob Radzinouriez दूसरे एक क्रिमिनोलोजिस्ट मिस्टर बी० वाहनर उन है का कहना है कि जितने क्राइम रिपोर्ट होते हैं उन में से कम से कम 5 या 7 गुना एसे होते हैं कि जिन की रिपोर्ट दर्ज होती ही नहीं। स्थिति यह आ गयी है कि आज पुलिस ने अपनी रिपोर्टस छपना भी बन्द कर दिया है जिस से पता ही न चल सके कि कितने कांड हो रहे हैं। यह इस लिये कि उन की कोई सीमा ही नहीं रही। मैं सरकार का और सदन का ध्यान इस बात की ओर दिलाना चाहता हूं कि ला एण्ड आर्डर सिचुएशन का उल्लेख राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में होना चाहिए था, लेकिन उस पर उन्होंने पर्दा डाल दिया है। उन्होंने नहीं डाला, मैं कहता हूं कि सरकार ने पर्दा डलवा दिया है।

एक बात और। मेरे मित्र नाराज न हों। जब यह स्थिति आ गयी है देश में कि राजनैतिक कार्यकर्त्ता और नेता और दस्यु और असामाजिक तत्वों के बीच में एक सांठगांठ हो गया है तो उस में से भारी भ्रष्टाचार उत्पन्न हो रहा है। इस कारण राजनीतिक भ्रष्टाचार उत्पन्न हो रहा है राजनैतिक भ्रष्टाचार के बारे में भी आप ने कोई नीति नहीं अपनायी। भाषण में नीति आनी चाहिए थी कि वह कैसे रुकेगा। रुकते रुकते भी कहना चाहता हूं कि क्यों आये। आप की आंख देख कर मैं रूक गया हूं मैं नाम नहीं लूंगा, लेकिन उनकी वजह से प्राइसेज बढ़ी हैं बढ रही है। एक तालमेल है राजनीतिक नेताओं में और उन में।

जब मैं नेताओं की बात कहता हूं तो मैं मंत्रिमण्डल के बाहर के लोगों की बात नहीं कहता। सब शामिल हैं और उन के और असामाजिक तत्वों के बीच सांठ गांठ है। इस से पोलिटिकल करप्शन पैदा होता जा रहा है। राजनीतिक भ्रष्टाचार पैदा हो रहा है और इन कई कारणों से कीमतें बढ़ रही हैं। चीजें नहीं मिल रही हैं। समय लग जायगा ब्यौरा देने में और ब्यौरा तो आप सब जानते हैं, सदन जानता है कि कहां कहां लेन देन हो रहा है और बाद में पता चलता है कि बाजार में कीमतें बढ़ गयी। हमारे राष्ट्रपति जी के वक्तव्य में कहा गया है कि बड़ी खुशी की बात है कि कीमतें बंधी हैं। मैं पूछना चाहता हूं ——फाइनेंस मिनिस्टर साहब चले गये कि कीमतें कहां रुकी हैं। सदन में रुकी हैं या वित्त मंत्रालय में रुकी हैं कम से कम दिल्ली के चांदनी चौक में नहीं रुकी हैं, बम्बई के बाजार में नहीं रुकी हैं और किसी कस्बे के बाजार में नहीं रुकी हैं। हो सकता है कि वित्त मंत्रालय की फाइलों में रुकी पड़ी हों। राष्ट्रपति

जी के भाषण में कहा गया कि कीमतें रुक गयीं, लेकिन कीमतें रुकी नहीं हैं। कीमतें बढ़ी हैं। 79 के बाद 80 में, 81 में कीमतें दुगनी और तिगुनी हो गयी हैं।

श्रीमती प्रतिभा सिंह (बिहार) : माथुर जी ने गलती से 79 का नाम ले लिया।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : गलती नहीं, 1979 में कीमतें कम थीं, अब दुगनी हो गयी हैं, यह कह रहा हूं। आज ही एकोनामिक सर्वे बांटा गया है। एकोनामिक सर्वे स्वयं राष्ट्रपति जी के भाषण में किये गये दावों को काट रहा है और आप कहते हैं कि प्रोडक्शन बढ़ा। आप का एकोनामिक सर्वे कहता है कि बढ़ा नहीं है। आप कहते हैं कि उत्पादन बढ़ा है, लेकिन बढ़ा नहीं है। आज भी एक जानकारी मुझे कोई दे दे। पब्लिक अंडरटेकिंग्स का एक भी कोई कारखाना क्या ऐसा है कि जो अपनी पूरी क्षमता के अनुसार काम कर रहा है? एक भी कारखाना ऐसा नहीं है (समय की घंटी) मेरे पैंतालीस मिनट हो गये?

उपसभाध्यक्ष : (डा० रफीक जकरीया) आपके 42 मिनट हैं और अभी अश्विनी कुमार जी ने भी बोलना है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : जो इन्होंने मेरे 20 मिनट लिये हैं वह इसमें से काट दीजिए। (व्यवधान)

जो इकोनोमिक सर्वे पर टिप्पणी आई है वह मैं बताना चाहता हूं :

In a matter that can only be described as typical, the Economic Survey has studiously underplaytd the extent of tlie setback that the Indian economy has suffered in 1982-83. . . ."

This is the comment of *Time of India.*

और यही बात सारे अखबार कहेंगे। मैं कम से कम इतनी आशा करता था कि सरकार जब अपनी आर्थिक नीति का उल्लेख करेगी तो एक बार वित्त मंत्रालय से सलाह अवश्य करेगी कि स्थिति क्या है। इतना ही नहीं पिछले साल जुलाई और अक्तूबर में दो बार एडमिनिस्ट्रेटिव एक्सपेंडिचर सप्लीमेंटरी ग्राटस आप लाये जबकि ऐसा कभी नहीं हुआ। जुलाई में आपने 400 करोड़ का एडमिनिस्ट्रेटिव एक्सपेंडिचर मांगा और अक्तूबर में 2.285 करोड़ रुपये का मांगा। आप कहते हैं कि इकोनोमिक सिच्युएशन अच्छी है। आपने अपने एडमिनिस्ट्रेटिव खर्चे बढ़ा लिये हैं इसलिये मांगा है। दूसरे आई०एम०एफ० की दूसरी किश्त आने वाली है। पहले मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि आई० एम० एफ० की सीलिंग से ज्यादा इन्होंने एडमिनिस्ट्रेटिव खर्च कर दिया है अब सूद कहां से दिया जायेगा। कल ही वित्त मंत्री महोदय ने फारेन एक्सचेंज रिजर्व के बारे में वक्तव्य रखा था। हमारे फारेन रिजर्वस क्या हैं यह कल के आंकड़े हैं जो बोल रहे हैं। फिर भी आपका यह दावा है आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। आपके पास खर्च करने के लिए पैसा नहीं है एडमिनिस्ट्रेटिव खर्च बढ़ता जा रहा है और आप खड़े हो कर ऊंची बांग लगाते हैं कि देश की आर्थिक स्थिति अच्छी हो रही है। श्रीमन्, मैंने पहले कहा था कि यह सरकार सरकार नहीं है, इसकी कोई दिशा नहीं है। एक दिशा केवल यह है—येन-केन-प्रकारेण कुर्सी पर बने रहना चाहिए। यह गलत है। एक बात

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

और कही गई है राष्ट्रपति जी के अभि-भाषण में। उन्होंने कहा है कि हमारे जो औद्योगिक कर्मचारी हैं उनके लिए हमें उतनी ही चिंता है जितनी कि कृषि मजदूरों, किसानों के लिए है। बहुत अच्छा। औद्योगिक विवाद एक्ट में जो संशोधन किया गया है उसमें शिका-यतों को निपटाने के लिए व्यवस्था की गई है। क्या कहने हैं? जख्म पर नमक छिड़क रहे हैं। मजदूरों के साथ आपने क्या किया? इस बात का सबूत है बम्बई में एक साल से ऊपर चल रही कपड़ा मिल मजदूरों की हड़ताल। यही हैं आप के मजदूरों के साथ अच्छे रिश्ते। आप कहते हैं कि हमने कानून में परिवर्तन किया है। कानून में परिवर्तन कौन सा किया है। आप नेशनल सिक्योरिटी एक्ट लायें हैं। इससे आपने मजदूरों के अधिकारों पर छापा मारा है। आपने हड़ताल करने का अधिकार छीन लिया। उसका नतीजा क्या है? उसका नतीजा यह है कि सारे मजदूरों ने आपका बहिष्कार किया है। आपने तीन बार ट्राइपरटाइट मीटिंग बुलाने की कोशिश की। तीनों बार सारे मज-दूरों ने उसका बहिष्कार किया— केवल एक संस्था "इंटक" जो राजसत्ता के दल के साथ संबंधित है उसमें गई। इस पर यह दावा करना राष्ट्रपति के भाषण में कि हमने मजदूरों के साथ संबंध अच्छे किये हैं इससे बड़ा असत्य और कोई नहीं हो सकता। क्योंकि आप समय देख रहे हैं और मैं ने भी अपने साथी के लिए समय छोड़ना है इसलिए थोड़ा सा समय और लेकर समाप्त करूंगा। आंतरिक स्थिति क्या है? असम में चुनाव हो गये। ऐसा लग रहा है जैसे कोई श्मशान में भैरवी गाई हो। पंजाब में आग लगी है, लेकिन आप उसे सुलझाना नहीं चाहते हैं। मेरे तीन अकाली साथी, एक बहिन और दो अन्य सदस्य इस सदन को छोड़कर चले गये हैं। हमने उनसे अपील की कि आप मत जाइए उनकी मांगें गलत हैं या सत्य हैं, इसमें मैं नहीं जाना चाहता लेकिन उनका दिल दर्द से भरा है। वे समझते हैं कि सदन में बैठने के कोई मायने नहीं है। आज इस सरकार की ऐसी स्थिति क्यों हुई? इसका कारण यह है कि सरकारी दल की मंशा यह है कि अकाली दल को किसी तरह से अपनी जेब में डाल लो तो समझौता हो जाएगा, वरना नहीं होगा। इतिहास इस बात का गवाह है कि अकाली दल दो बार कांग्रेस में मिला और दो बार निकल कर बाहर आया। यदि मेरी जानकारी सही है तो अकाली दल से इस प्रकार के इशारे भी किये गये थे कि आपको पंजाब की सरकार में ले लेंगे। जब तक दिल्ली में चुनाव था, उसमें बड़ी मीठी-मीठी बात कही गई ताकि किसी प्रकार से, येन केन प्रकारेण चुनाव जीत लिये जायें। चाहे होशियारी से जीते गएं या पैसे से जीते गये, चुनाव जीत लिये गये। यह जीत आपको मुबारक हो। उसके बाद अकालियों को अंगूठा दिखा दिया गया .... (**व्यवधान**) इससे क्या होता है। हार-जीत तो होती रहती हैं। यह राजनीतिक का खेल है। गिर पड़े गिरकर उठे, उठकर चले इस तरह से तय की हमने मंजिलें। लिहाजा यह एप्रोच कि सरकार का ही भला हो, सरकारी दल का ही भला हो, इसके आधार पर सारे राज-नीतिक समझौते किये जाते हैं। उसका नमूना अकालियों के साथ की जा रही वार्ता है। कौन कहता है कि यह सरकार काम करती है? यह सरकार काम नहीं करती है। नीतिविहीन, दिशा विहीन, और हर प्रकार से न काम

करने वाली एक टोली मात्र है, ढांचा मात्र है।

मेरे साथियों ने कहा कि दिल्ली में नान-एलाइन्ड कांफ्रेंस होने वाली है। उसमें हमारा ऊंचा सर होगा और उसमें हमारा देश नेता हो जाएगा। इतनी बड़ी इच्छा है इतनी बड़ी आकांक्षा है। यह कांफ्रेंस किसी और देश में होने वाली थी, लेकिन हमारे यहां हुई तो हमको नेता बनने का मौका मिल गया। इनको यह पता नहीं है कि यह एक परम्परा है कि जिस देश के अन्दर नान-एलान्ड कांफ्रेंस होती हैं उसी देश को नेता चुना जाता है। यह कोई बड़ी बात नहीं होगी। लेकिन इसी कांफ्रेंस में अफगानिस्तान और कम्पूचिया का प्रश्न खड़ा होगा और एशियन जितने भी देश हैं वे इसमें आपका साथ देने वाले नहीं हैं। आप समझते हैं कि इससे हमारे देश की बहुत बड़ी इज्जत बढ़ गई? मेरे मित्र जैन साहब ने कहा कि जब हमारी प्रधान मंत्री अमेरिका गई तो उनका बड़े जोरों से स्वागत हुआ। इधर से झा साहब ने कहा कि उनके पिता जी अमेरिका गये थे तो उनका भी बड़े जोरों से स्वागत हुआ था। झा साहब इसके गवाह हैं ... (व्यवधान)

श्री शिव चन्द्र झा (बिहार) : पंडित जी जब वहां गये थे तो मैं वहीं था।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं तो आपकी बात की गवाही दे रहा हूं कि झा साहब उस वक्त वहां पर मौजूद थे हमारे प्रधान मंत्री का कितना स्वागत होता है इसकी दाद दी जाती है, कितने लाल कपड़े उनके लिए बिछाये गये, इसकी दाद दी जाती। स्वागत इस बात का किया जाना जाहिए कि हम अपने हितों के लिए क्या कुछ प्राप्त कर सके है। दुनिया में हमारी बात मानी जाती है या नहीं। मैं उधर के नेताओं से पूछना चाहता हूं कि पिछले दो सालों में हमारी कौनसी बात मानी गई है। आप मुझे बता दीजिए। वाह-वाही के अलावा और कोई बात नहीं दिखाई देती है ..... (व्यवधान) श्रीमन्, आपकी घंटी बजने के बाद में इतना ही कहना चाहता हूं कि राष्ट्रपति महोदय का स्वागत है, उनका धन्यवाद है, लेकिन खेद है कि आपके अभिभाषण में सरकार को मजबूर नहीं किया गया कि जो देश की हकीकत है, सच्चाई है, वह सामने रखकर सचेत करते। आपने धुंधला सा पर्दा डाल दिया है और यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि यह सरकार है। मैं कहता हूं कि सरकार दलों हैं कुछ ना-काम करने वाले कुछ लोगों की टोली मात्र है। इतना कहकर मैं समाप्त करता हूं।

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ » Mr. Vice-Chairman, Sir, originally I had decided to speak in English. But, as my friend has addressed the House in Hindi, I would speak in Hindi to tell him exactly what 4he history of this country has been.

जनाबे सदर, मैं आपसे गुजारिश करना चाहता हूं कि मेरे एक लायक दोस्त यहां मुल्क की तारीख बदलना चाहते हैं। हिन्दुस्तान महज, सिर्फ असम ही नहीं है, हिन्दुस्तान एक अजीम मुल्क है जिसने 1947 में आजादी पाई। जब मुल्क को आजादी मिली तो उस दिन इन लोगों का कोई नामोनिशान हिन्दुस्तान में नहीं था। जिन नेताओं ने

[श्री हंस राज भारद्वाज]

हिन्दुस्तान को आजाद कराया उसमें उस खानदान ने हमेशा अगुवाई की जिस खानदान के बारे में मेरे दोस्त जिक्र कर रहे थे। आज हिन्दुस्तान की तारीख गवाह है जो उस खानदान ने मुल्क की आजादी में कुर्बानी दी। उस खानदान ने मुल्क के लिए जो कुर्बानी दी उसको ये लोग जानेंगे नहीं क्योंकि ये लोग मुल्क की आजादी की तारीख में कहीं शामिल नहीं थे। उसके बाद मुल्क को मजबूत मुल्क बनाने के लिए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक बीड़ा उठाया। उस मुल्क को जिस मुल्क को सैंकड़ों सालों तक गुलामी भुगतनी पड़ी थी, उस मुल्क को जिस मुल्क को फिरकापरस्ती और फयूडल सिस्टम ने मुल्क को टुकड़े टुकड़े करके रख दिया था उसको एक मजबूत मुल्क बनाने के लिए पंडित नेहरू ने एक मुहिम शुरू की। बदकिस्मती की बात है कि आज की भारतीय जनता पार्टी या जनता पार्टी आज उसी फयूडल लार्डस के रहमोकरम पर चल रही है जिन्होंने मुल्क की आजादी में रूकावट डाली थी। आज आप देख लीजिए ये लोग वहीं हैं जो न मुल्क की आजादी में शरीक थे, न मुल्क की मजबूती में शरीक थे। तो जाहिर है कि ये उस खानदान की मुखालफत करते हैं। हमें इसमें शक नहीं होना चाहिए कि उनको एक जाती-रंजिश क्यों है। हम उस रहनुमा की कयादत में काम कर रहे हैं जिस रहनुमा की आजादी के जंग से आज तक मुल्क के लिए बदस्तूर काम किया है। आप देखेंगे कि 1947 के बाद, 1950 में जब हिन्दुस्तान का कांस्टिट्यूशन बना तो उन्हीं लोगों ने जिन्होंने हिन्दुस्तान को आजाद कराया था, हमारे आईन में डाइरेक्टिव प्रिंसिपल को रखा। यह कोई भारतीय जनता पार्टी के नेता और जनता पार्टी के नेता ने डाइरेक्टिव प्रिंसिपल्स को वहां नहीं रखा .... (व्यवधान) ....आप सुनिए। आपकी जनता पार्टी वहां कभी नहीं थी ... (व्यवधान) ...आप सुनिए। मैं हिस्ट्री सामने रख रहा हूं। मुल्क गवाह है। गद्दारों की बात सुनी जायेगी ... (व्यवधान) ...या सच्चाई की बात सुनी जाएगी। ...(व्यवधान).. आप बैठ जाइये और आप सुनिए। मुल्क गद्दारों की बात सुनता है या देशभक्तों की बात सुनता है। देशभक्तों को दबाया नहीं जा सकता है। मुल्क देशभक्तों का साथ देगा। डाइरेक्टिव प्रिंसिपल्स और देश में फाइव इयर प्लान पंडित जवाहरलाल नेहरू ने शुरू की और फाइव इयर प्लान्स 1977 तक बदस्तूर चलते रहे। लेकिन जब जनता पार्टी हकूमत में आई तो न इन्होंने मुल्क को देखा और न फाइव इयर प्लान को देखा। इन्होंने उठा कर सारी चीजों को दरी के नीचे रख दिया। इनका झगड़ा हुआ। जनता पार्टी कहती थी कि हमारा व्यक्तिगत प्रधानमंत्री बने, बी० जे० पी० वाले उस वक्त थे नहीं। इनका आपस में झगड़ा हुआ और ये तय नहीं कर पाये (व्यवधान) ....मैं जरा वरासत बताना चाहता हूं। आप सुनिए, आपकी वरासत क्या है। यह आपको सुनना पड़ेगा। आप देखिए इन्होंने फाइव इयर प्लान को खत्म कर दिया। उसके बाद मुल्क द्वारा इनको ठोकर मार दी और ठोकर मारने के बाद हिन्दुस्तान के लोगों

[उपसभाध्यक्ष (डा०) श्रीमती) नाजमा हेपतुल्ला पीठासीन हुई]

ने अपनी अजीम नेता को दुबारा प्रधान-मंत्री बनाया। देश भक्त नेता को उन्होंने प्रधानमंत्री बनाया। इन्होंने देश को

तबाह और नेस्त-नाबूद कर दिया था, उस देश को दुबारा उठाकर, अपने गले से लगाकर वे बोलीं कि हिन्दुस्तान को इस तरह से मायूस नहीं रहने दिया जाएगा। दुबारा प्लानिंग किया और हिन्दुस्तान की एकनामी जो कि तहस-नहस हो चुकी थी, जिसको विदेशों के हाथों बेच चुके थे उसको दुबारा से बदाने की कोशिश शुरू की। ये हमको आंकड़े बता कर अपनी बात को कहते हैं कि हिन्दुस्तान को जनसंघ ने आजाद कराया। जनसंघ ने हिन्दुस्तान को मजबूत बनाया, जनसंघ ने महात्मा गांधी की कयामत कायम की। बम्बई का वह सेशन, आप गांधीयन प्रिंसिपल्ज में चलना चाहते हैं, यहां लोगों को बेवकूफ नहीं बना सकते। खुद बेवकूफ हो सकते हो। हिन्दुस्तान में महात्मा गांधी का कत्ल किस ने किया था? यह सारी दुनिया जानती है और आज आप बम्बई बान्द्रा में लोगों को बेवकूफ बना रहे हैं। मैं मानता हूं कि आज हिन्दुस्तान में आजादी के बाद 32-33 साल में कुछ लोग जंगे-आजादी में शामिल थे वह नहीं रहे लेकिन आज भी हिन्दुस्तान में फ्रीडम फाइटर्स जो लोग मौजूद हैं जो आपका असली रूप जानते हैं। हिन्दुस्तान में 1947 के बाद क्या हुआ। यह हम जानते हैं गरीबों के बच्चों के लिए कांग्रेस हकूमत ने क्या किया। आज हम दिल्ली में मुकाबला कर रहे हैं। कांग्रेस ने यह किया। मौर्य कोई धन्ना सेठ का लड़का नहीं, मौर्य एक आम आदमी का बेटा है जो आज आपके मुकाबले में कांग्रेस ने इस देश में आपके सामने ला कर खड़ा किया। मेरा गांव शहर से 20-25 मील की दूरी पर था। हमारे गांव में देखते थे एक घंटा सरसों के तेल का दीया चलाते थे और लोग खाना पीना समाप्त कर के सात-आठ बजे तक सो जाते थे। सभी जानते हैं दिल्ली के धन्ना सेठ के दलाल लोग यह नहीं जान सकते कि आज हिन्दुस्तान ने क्या तरक्की की है वह दिल्ली में रहे और पले हैं और इन्होंने करोड़ों की पूंजी इकट्ठी की। आप यह देखेंगे, हमने देखा है कि हम जब स्कूल जाते थे तो अपना बस्ता सिर पर रखते थे और फिर नदी पार करते थे और चार पांच मील दूर स्कूल में पढ़ने जाते थे। आज वह हालत हिन्दुस्तान में नहीं है। हम दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट में आपका मुकाबला कर रहे हैं। यह हमारे नेताओं ने हमें दिया है। आगे जा कर के आप यह भी देख लीजिये 1966-67 में हम ने हिन्दुस्तान में अमरीका से अनाज मंगा कर खाया था और आज हिन्दुस्तान एग्रीकल्चर आउट-पुट में सेल्फ-सफिसियेंट है। यह भी आप मानने के लिए तैयार नहीं हैं। आपको मालूम है कि जब आप लोग जिस वक्त 1962 में चाइनीज इनवेजन हिन्दुस्तान पर हुआ था हमें अमरीका की शरण में जाने के लिए कह रहे थे कि अमरीका से न्यूक्लियर अम्ब्रेला मांग लें शायद कभी चाइना हमला न करे। फिर हिन्दुस्तान के इन्हीं प्रधानमन्त्री जी ने हिन्दुस्तान के डिफेंस को इतना मजबूत बना दिया कि आज सिक्किम हिन्दुस्तान का एक अंग हो गया। चाइना और न अमरीका ने किसी ने कुछ नहीं बोला और उसके बाद हिन्दुस्तान ने जन्म दिया बंगलादेश को। यह हमारी सैनिक ताकत का मुजाहिरा था। आप इस बात को भूल जाते हैं। उस समय आपके नेताओं ने कहा दुर्गा बोल रहीं हैं आज उस दुर्गा को आप भूल गये। आज उसी नेता की लीडरशिप के अन्दर हम लोग काम कर र हैं जिसको आप क्रिटिसाइज कर रहे हैं। आप देखते जाइये। हिन्दुस्तान के अन्दर

[श्री हंसराज भारद्वाज]

कोई आदमी यह नहीं मानेगा। कोई कितना भी मुखालफ गवर्नमेंट का हो उसको यह बात माननी पड़ेगी कि 1947 के बाद 1953 में और 1953 के बाद 1962 में नहीं हुआ था और इसके बाद 1965 के अन्दर ताशकन्द समझौता कराया गया। ताशकंद के समझौते के बाद 1971–72 में वह समझौता इन्दिरा गांधी जी ने बाहर नहीं होने दिया। भुट्टो को शिमला आना पड़ा, पैरों में झुकाना पड़ा इन्दिरा गांधी के सामने शिकस्त खा कर तब शिमला एग्रीमेंट हुआ था। यह थी हमारे मुल्क की हिफाजत और तरक्की। जो आप लोगों को इस ऐनक से नहीं दिखाई देगी। आज हिन्दुस्तान में इनसेट बी जा रहा है यह भी आपको नहीं दिखाई देगा और हिन्दुस्तान में काले टी. वी. से कलर टी. वी. आया है यह भी आपको दिखाई नहीं देता है क्योंकि आपकी ऐनक से तो एक ही रंग दिखाई देता है और आज सब से बड़ा खतरनाक हथियार है जो आपने पकड़ा है यह बड़ी बदकिस्मती की बात है। मैं राष्ट्रपति के भाषण में देख रहा था कि उनके भाषण में इन तत्वों से निपटने के लिए क्या ब्यौरा है। जो तत्व हिन्दुस्तान को तबाह करना चाहते हैं। आज आसाम के मसले पर देख लीजिये, हमने आसाम का सम्बन्ध हिन्दुस्तान के साथ कितना मजबूत बना दिया था। 1976 में कांग्रेस अधिवेशन गोहाटी में हुआ वहां पर सेवन सिस्टर्ज के नाम से हिन्दुस्तान के दूसरे भाग से आये लोगों का स्वागत हुआ। उस वक्त आप उस सेशन में नहीं थे, जाहिर है आप हो भी नहीं सकते क्योंकि आप कांग्रेस में नहीं। आप को देखना चाहिये कि इसी हुकूमत ने इसी नेता ने इन छोटे छोटे मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, राज्यों के इन लोगों को इकट्ठा किया और यह बताया कि यह तुम्हारे दूसरे भाई हैं हिन्दुस्तान के दूसरे अंगों से आए हैं इनसे मिलिये इनकी बात सुनिये, अपनी बात बताइये। आपने आज क्या कराया है? दिनेश गोस्वामी जी मेरे पुराने दोस्त हैं वे कल कह रहे थे कि कितने आसाम में आप लोग गये हैं। आपने ऐसा वातावरण बना दिया है कि अपने मुल्क के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में हम नहीं जा पा रहे हैं। आज हिन्दुस्तान में गली गली में बम बनाए जा रहे हैं छोटे छोटे बम बनाए जा रहे हैं, मशीन गनें रखी जा रही हैं, पिस्तौल रखे जा रहे हैं, वह किस पर इस्तेमाल हो रहे हैं, हम पर हो रहे हैं।

उनके हित में जाते हैं। वाजपेयी जी कहते हैं इलेक्शन मत कराओ। मैं हैरान हूं। डेमोक्रेसी अगर हिंदुस्तान में जिंदा रहेगी तो क्या उसको बगैर इलेक्शन जिंदा रखना चाहते हो। कब तक कांस्टीट्यूशन अमेंडमेंट करते जिन लोगों को आपने आगे कर रखा है उनको करोडों रुपया कहां से मिला? एक दिन में उन्होंने पहाड़ों में नोट छापने शुरु किये। यह बाहर का पैसा आप लोगों के जरिये हिंदुस्तान में आ रहा है और इन नौजवानों को जो हमारी तरह जजबाती लोग हैं, स्टूडेंटस हैं, जो किसी मां के बेटे हैं बाप के बेटे हैं इन को आप झोंक रहे हैं उस आग के अन्दर जो इस मुल्क को तबाह करना चाहती है। जाहिर है कि इसलिये हिन्दुस्तान में बी० जे० पी० कभी इलेक्शन नहीं जीती मुल्क में जाकर देख लीजिये। मैं बंगाल के इलेक्शन में गया वहां पर सीधी लड़ाई मेरे लेफ्टिस्ट दोस्तों सी०पी०आई० (एम०) और हमारे बीच थी। आप लोग कहीं नहीं दिखाई दिये। फिर आपने नारा दिया केरल में हम मजबूत हो गये हैं, हम वहां जा रहे हैं। आप केरल में भी गये लेकिन आपका कहीं नामो-

निशान नहीं है । फिर आप कहते हैं कि आंध्र में हमारी शिकस्त हो गयी कर्नाटक में शिकस्त हुई , वहां आप कहते हैं इन्दिरा गांधी जी हारी हैं अब दिल्ली की बारी है । दिल्ली में आपकी बात को लोगों ने बड़े ध्यान से सुना । लोगों ने यह भी सुना कि बी०जे०पी० वाले यह बात कह रहे हैं कि दक्षिण में इन्दिरा गांधी हारी है और अब दिल्ली की बारी है । लेकिन दक्षिण में बी०जे०पी० कहां जीती है । आपने जूते पालिस किये हैं जनता पार्टी के और एन०टी०आर० के और आज भी आपकी हुकूमत कहां है । इन लोगों ने अगर कांग्रेस को हराया तो भी हमने 81 सीटें कर्नाटक में जीतीं, 61 सीटें आन्ध्र में लीं । अब वहां पर हमारी पार्टी आइडियालाजीकली सबसे मजबूत है । आप यह बात भूल गये । आप दिल्ली को उम्मीद पर जिन्दा थे । माथुर साहब सुनिए, यह बात आपके लिए मैं कह रहा हूं आप दिल्ली पर उम्मीद लगाये बैठे थे हम भी इस बात से दुखी थे कि कहीं जज़बात में आकर दिल्ली के लोग ऐसा न करें कि जन-संघियों को सुन लें । आपने अपना नाम बदल दिया लेकिन आपने कारनामे नहीं बदले हैं । आप झूठी बातों को बढ़ा चढ़ा कर दिल्ली में कहना चाहते थे । लेकिन दिल्ली हिन्दुस्तान का दिल है और हिन्दुस्तान का दिल इन्दिरा गांधी के साथ है । इन्दिरा गांधी हिन्दुस्तान के दिल की रहनुमा हैं आपके साथ नहीं हो सकतीं । क्यों नहीं हो सकती, कि इन्दिरा गांधी के पिता जलाहरलाल नेहरू ने देश की आजादी के लिए जेल काटी जो अटल बिहारी वाजपेयी ने माफीनामा मध्य प्रदेश की कोर्ट में भरा । दिल्ली के लोगों ने पढ़ा । यह फर्क है । आप इसको सुनिये । आप लोग मुकाबला करिये, आइडिया-लाजीकली मुकाबला करिये पार्टी की स्ट्रेंग्थ बढ़ाइये, प्रोग्राम दीजिये, पालिसीज दीजिए तब शायद लोग आपकी बातें सुनेंगे । आपकी पार्टी में तो प्राफिटियर्स, एडेल्ट्रेटर्स, ब्लैकमार्केटियस and feudal lords. Who is feeding you today? It is the feudal lords. All former rulers are paying money into your pockets and, therefore, you are palying their game. Do you want to ridicule the democratic forces? That cannot be possible.

आप इस बात को भूल गये हैं कि हिन्दुस्तान के लोग इन्दिरा गांधी का साथ क्यों देते हैं । इन्दिरा गांधी का साथ हिन्दुस्तान के लोग इसलिये देते हैं कि उनके अन्दर हिन्दुस्तान के लोगों के लिए ममता है । हमारी पार्टी में 90 हरिजन एम० पी० हैं, क्या हरिजन एम० पी० आपने बनाए हैं, आदिवासी या गरीब हैं ? इसलिए हिन्दुस्तान के गरीब, आदिवासी, पिछड़े लोग इन्दिरा गांधी का साथ देते हैं । बाजपेयी का साथ कभी देंगे नहीं । आप भूल जाइये इस बात को ।

तो मैं आपको एक बात बताना चाहता हूं सदर साहब, कि आज हिन्दुस्तान के सामने एक चुनौती है । आप भूल जाइये हमने कितनी तरक्की कर ली है साइंस में । हमारा साइंटिस्ट दुनिया में सब से अव्वलतरीन माना जाता है । आप दुनिया में जाकर देखिये । आप केलिफोर्निया में जाकर देखेंगे कि वहां पर हिन्दुस्तान के साइंटिस्ट आपको मिलेंगे ।

यह बात मानी जानी चाहिए कि हम सैकड़ों साल की गुलामी के शोषित लोग हैं । हमारा दमन किया पहले तो राजामहाराजाओं ने फिर उसके बाद अंग्रेजों ने और उन अंग्रेजों की लड़ाई के बाद हमारे जरिये तरक्की के काम हुए । लेकिन कोई भी नेता इस मुल्क का आ जाय अगर देश की पापूलेशन को कंट्रोल नहीं किया गया तो कोई चमत्कार इस मुल्क में नहीं कर सकता । उस प्रोग्राम की तरफ कदम किसने उठाया ; 1975-76 और 77 में इंदिरा गांधी सरकार ने कहा कि फैमली प्लानिंग को एक प्रोग्राम के रूप में किया जाय । 77 का इलेक्शन जनता पार्टी ने सारा फेमली प्लानिंग के विरोध में जीता । आज आप इस बात को मना नहीं कर सकते और एक नारा दूसरा आपने दिया तुर्कमान गेट का आज उसी तुर्कमान गेट में आपको

[श्री हंस राज भारद्वाज]

हरा दिया गया । क्योंकि आपका जो मिथ था जो आपने लोगों के अंदर भ्रम फैलाया था वह आप के सामने आ गया । आप भी आज मानते हैं और हम भी मानते हैं कि अगर फेमिली प्लानिंग नहीं हुई तो कितने ही लोग हिन्दुस्तान में मेहनत कर लें आगे जाकर मुल्क की इकनामिक फन्ट में कामयाबी नहीं हो सकती । अब आप कहेंगे कि कामयाबी क्यों नहीं हो सकती । अभी एक दोस्त ने सुबह कहा कि साहब हिन्दुस्तान में पांच दस साल के बाद ऐसे बच्चे पैदा होंगे जो तीन मिलियन से ज्यादा होंगे। तो हम उनका पालन पोषण नहीं कर सकते । उन्होंने बिल्कुल सही बात कही है । तो जरूरी है कि बच्चे कम पैदा करें । लेकिन आप तो इलेक्शन का यहीं मेनिफेस्टो बना रहे हैं कि फेमिली प्लानिंग नहीं होना चाहिये, तो बच्चे कम कैसे पैदा हो सकते हैं ।

एक तरफ तो चाहते हैं कि मुल्क की तरक्की हो और दूसरी तरफ लोगों में भ्रम फैलाते हैं । भ्रम में रहने वाली न कोई कौम जिंदा रह सकती है और न कोई पार्टी जिंदा रह सकती है और न कोई मुल्क जिंदा रह सकता है आप की पार्टी का सफाया हो रहा है और इस मुल्क ने साबित कर दिया है कि भले ही कोई और पार्टी—थोड़ी बहुत लेफटिस्ट फोर्सेसज हैं हिन्दुस्तान में सी० पी० (एम) और सी०पी० आई० हैं पर वह लोग आप की तरह भ्रम नहीं फैलाते कि हम 1980-81 में गांधियन हो गये 1948 में मर्डरज थे । इतना चेंज, इतना भ्रम इस मुल्क में न कभी फैलाया गया है और न कभी फैल सकता है और आप यह समझ लीजिए सी०पी० एम० के साथ एक आइडियालोजिकल लड़ाई हो सकती है सी०पी०आई० की भी हो सकती है दूसरी पार्टी की भी हो सकती है लेकिन जब कभी आप को मार पड़ती है तो इस दल में घुस जाते हैं कभी जनता पार्टी में घुस जाते हैं और कभी सी० पी० एम० में घुस जाते हैं । तो आप की क्या आइडेंटिटी है; आप का क्या प्रोग्राम है; वह लोगों को मालूम होना चाहिए ।

आज कल आपने चौधरी चरण सिंह की शरण ली है क्योंकि देहातों में आम बनिया लोगों को जाट लोग गांव में घुसने नहीं देते । तो आपने जाट के डंडे का सहारा लिया । देहात में घुसने के लिए आप अपनी असलियत को पहचानिये । और आप को गांवों में घुसने क्यों नहीं देते क्योंकि आप देहातों का अनाज सस्ते दाम पर खरीद करके आप अपनी पार्टी के व्यापारियों के जरिये सात रुपए किलो बेचना चाहते थे । वह इंदिरा गांधी ने नहीं होने दिया। इसलिए आप हमेशा इंदिरा गांधी को ही टार्गेट बनाना चाहते हैं कि अगर इंदिरा गांधी और अगर नेहरू परिवार खत्म हो जायें तो आपकी दोनों जेबें भरी रहेंगी। कौन नहीं जानता कि 1977 से 1980 तक आपने इन लोगों को मालामाल कर दिया और वही जिसका आप सुबह नाम ले रहे थे, बिरला, टाटा, डालमिया क्या हमको सपोर्ट करते हैं, आपकी तो एक्जिटेंस उन लोगों पर बनी है । आपने 1977 में उनसे पैसा लिया और उन्हीं लोगों पर केस किया—जीप केस आपने हम पर मुकदमा बनाया और साहब असिस्टेंस तो जनता पार्टी ने भी ली थी । हम पर तो केस बनाया गया आप चूंकि केस बनाने वाले थे । हमने आप पर कोई केस नहीं बनाया ।

आपके हिमाचल प्रदेश के भूतपूर्व चीफ मिनिस्टर को देख लीजिए, शान्ता कुमार के बारे में एक किताब छपी है। इसी तरह से दिल्ली में विजय कुमार मलहोत्रा, मेरा टीचर—तीन सौ रुपये पर टीचर था कैंप कालेज के अंदर, आज मर्सिडीज में चलता है। आप उसको ईमानदार कहते हैं।

आप चले जाइये मध्य प्रदेश में, सकलेचा जिस पर अफीम की स्मगलिंग का मुकदमा था, वह बहुत ईमानदार आदमी और भाई हमको आप भाषण देते हैं। हमारी पार्टी में केलिबर है। हमारी पार्टी में कौन मंत्री होगा, कौन एम० पी० रहेगा, यह हमारी नेता का काम है। हम अपनी नेता के वफादार हैं, यह हमारी ड्यूटी है। आपने तो तीन दिन पहले अटल बिहारी वाजपेयी का इस्तीफा मांगा था। आर० एस० एस० की मीटिंग हुई झंडावालां में और उसने इस्तीफा दे दिया और कहते हैं कि आर० एस० एस० का बी० जे० पी० से कोई ताल्लुक नहीं है। आर० एस० एस० से ताल्लुक नहीं है; तो बी० जे० पी० क्या चीज है? असलियत को मानो और उसी रास्ते पर चलो कि देश को हिंदुइज्म के नाम पर बांटेंगे और कभी मौका लगेगा, तो अमरीका और दूसरे मुल्कों को सौंप देंगे। यह करो अपना काम।

हमने नेतागिरी कैसे चलानी है, हम जानते हैं। हमारी जेनरेशन पालिटिक्स में रही है। आप अभी कल के बच्चे हैं। बी० जे० पी० का जन्म कब हुआ है, असली तारीख तो आपको भी मालूम नहीं होगी। आप क्यों बोल रहे हैं। आप देखिये कि आगे-आगे क्या होता है। आज हिंदुस्तान के लोग इंदिरा गांधी की तरफ देख रहे हैं।

अब मैं सदन को एक और बात कम्यूनल रायटस के बारे में बताना चाहता हूं। मैं चाहता था कि होम मिनिस्टर भी यहां पर होते। आज जो फिरकेवाराना फिसाद हो रहे हैं जगह-जगह पर—एक जगह कहीं पर जहां हरिजन का कटरा होगा, उसके सामने मंदिर बना दिया जाएगा, एक दीवार तोड़ करके, उसमें मंदिर बना दिया जायेगा फिर उसमें मूर्ति रख देंगे, फिर कोई आर० एस० एस० का वर्कर बिठा दिया जाएगा और वह कहेगा कि शाम को गऊ पूजा होगी और ऐसे झगड़ा करा देते हैं। जगह-जगह पर इनका मोडस आपरेंडी यही है। मैंने जाकर होज काजी भी में देखा हैं, मैंने काला महल दिल्ली में भी देखा वहीं किया गया है। क्या कहते हैं कि गरीब किसी हरिजन, बाल्मीकि के बच्चे को बिठा देते हैं, आप पीछे रह कर काम करते हैं। पिछले दिनों एक भूली-भटियारी मस्जिद का केस दिल्ली में हुआ, उसमें भी यही हुआ कि यह हमारे बाप दादा का मंदिर था, अढ़ाई सौ साल से ज्यादा तो हम दिल्ली में लोग देख रहे हैं आपने बापदादा के मंदिर को अढ़ाई सौ साल तक तो पूछा ही नहीं...यह तो आप के बाप-दादा की हैसियत है। आप फिरका-परस्त ताकतों को हिन्दुस्तान में मजबूत करना चाहते हैं और इस लिए आसाम की तरफ आप का रुख है क्यों कि आप जहां से आते हैं वहां आप का आपरेशन कामयाब नहीं होता, वहां मिशनरी भी हैं। नार्थ-ईस्ट चाइना से, बर्मा से मिलता है, आप की सप्लाई आराम से आती रहेगी। दिनेश गोस्वामी हमारे साथ 77 में थे। हम उन के घर में ठहरे थे गोहाटी में। उस वक्त बताइये हिन्दुस्तान में क्या फारेनर का इशू था? 78 में आप ने बीज बोये आसाम के अन्दर; उस का फल आज कांग्रेस सरकार

[श्री हंस राज भारद्वाज]

को काटना पड़ रहा है । आज अगर हम आसाम को मेनस्ट्रीम में लाना चाहते हैं तो अटल बिहारी वाजपेयी खड़े हो कर कहते हैं कि खून-खराबा हो जायेगा, आसाम का बेटा-बेटा कटवा देंग, लेकिन आसाम में लोकतन्त्र नहीं आने देंगे । पांच बार मैं गोहाटी गया था, उसी फ्लाइट में वाजपेयी साहब गये थे । वहां पर जब वह जाते थे तो हम ने कहीं मशीनगन नहीं चलती देखीं । वहां स्कूटरों पर बी० जे० पी० के झंडे लगे होते थे, आर० एस० एस० के वर्कर दिखाते थे कि हमारा राज है । आप का राज नहीं होगा । आप समझते थे कि आसाम के लोग आप की बात मान जायेंगे इस लिए आप उन के पीछे लगे, न इलेक्शन होगा, न आसाम का फैसला होगा और आसाम का फैसला नहीं होगा तो हम लोगों में जा कर कहेंगे कि क्या हुकूमत है जो आसाम में इलेक्शन नहीं करा सकी । आज कहते हैं क्या हुकूमत है कि कांस्टीटयूशन अमेंडमेंट नहीं करा सकी । कांस्टीटयूशन अमेंडमेंट से डेमोक्रेसी चलती है, प्रजातन्त्र तो वोट के जरिए चलता है । इंदिरा गांधी ने जहां जहां इलेक्शन ड्यू थे करवाये हैं।

फिर इलेक्टोरल लिस्ट के रिवीजन की बात की । जब लेफ्टिस्ट पार्टी ने कलकत्ता में चुनाव कराया तो हम लोग सुप्रीम कोर्ट में गये, आप सुप्रीम कोर्ट में नहीं गये, आप को सुप्रीम कोर्ट में इन्टरेस्ट नहीं था । उन्होंने कहा जब एक इलेक्शन डिसाइड हो जाता है

Revision or no revision, the election process must go on. You want to stall the election process. This is what exactly the R.S.S policy is. R.S.S. does not want elections in India. If they capture power once, then, there will be no elections in India. Indira Gandhi has proved in 1977....

कि इलेक्शन हिन्दुस्तान में होने चाहिए—अभी आन्ध्र और कर्नाटक में इलेक्शन हुए । हम हार और जीत एक दृष्टि से देखते हैं । हमारे नेता का विश्वास है कि लोग नहीं चाहते तो राज नहीं करना है, लोग चाहते हैं तो राज करना है । इसी लिए 80 में लोगों ने इन्दिरा गांधी में विश्वास प्रकट किया बी० जे० पी० कभी पावर में नहीं आ सकती है क्योंकि लोगों का उस में विश्वास नहीं है ।

राष्ट्रपति जी के भाषण में बहुत सी बातें कही गयीं । मैं चाहता कि राष्ट्रपति जी इस बात की ओर भी इशारा करते कि ऐसी ताकतों को मुल्क में उभरने नहीं दिया जायेगा । उस हालत में न कम्यूनल टैंशन होगा, न देश के अन्दर बालकेनाइजेशन का खतरा होगा, बल्कि देश मजबूत होगा और अगर आप लोगों को इस किस्म की कार्यवाही करनी होगी तो मुल्क का कानून मजबूत होना चाहिए कि ऐसे अनासिर से मुल्क को बचायें ।

वाइस चेयरमन साहबा, मैं आप के जरिए सदन को एक बात कहना चाहता हूं कि जब कोई भी आदमी अपनी पार्टी का या दूसरी पार्टी का शिकायत करे तो एक-दूसरे पर व्यक्तिगत लांछन नहीं लगाना चाहिए । जो खुद शीशे के महल में रहता हो वह दूसरे पर पत्थर फेंकता है । यह बात मैं यहां कहना नहीं चाहता था, आज तक कुछ हमारे लोग जनता पार्टी में चले गये, कुछ लोग दूसरी पार्टी में चले गये, लेकिन आर० एस०एस० और बी०जे०पी० के बारे में कहते हैं

Keep them apart. Read all the newspapers The Janata Party President Mr. Chandra-sekhar has said that they will compromise

with any body but nto with the BJP**.** The leftist parties also say the same thing. You are an isolated party. You should keep to that position.

आप कभी कोशिश न करें देश की मेन स्ट्रीम में दाखिल हो कर देश की तरक्की को रोकने की । देश जाग चुका है । आज हिन्दुस्तान जाग चुका है, हिन्दुस्तान के लोग जाग चुके हैं । दुनिया में लार्जेस्ट डेमोक्रेसी कहा गया है तो इंडिया को कहा गया है, किसी दूसरे मुल्क को नहीं कहा गया । बाहर भी जो हमारे क्रिटिक हैं वह भी देख रहे हैं कि इंडस्ट्री में, केपिटल फार्मेशन में, टैक्नीकल नो-हाउ में, साइंटिफिक एडवासमेंट में हिन्दुस्तान ही ऐसा मुल्क है जो आगे बढ़ रहा है और जाहिर है कि 70 करोड़ का मुल्क अगर टेक्नोलोजी और साइंस में बढ़ेगा तो छोटे छोटे, पांच-दस करोड़ के मुल्क हिन्दुस्तान के सामने कुछ नहीं रहेंगे । इस लिये गैर मुल्की ताकतें हिन्दुस्तान में नहीं पैदा होनी चाहिए । आप ने टेक्सटाइल स्ट्राइक का जिक्र किया । टेक्सटाइल स्ट्राइक क्या हमने करवा रखी है ? आप जैसी पार्टियों ने करवा रखी है । हम ने उन को कभी प्रोत्साहन नहीं दिया और न स्ट्राइक करवाई है । हम तो कहते हैं कि गरीबों को काम पर जाने दीजिए ताकि प्रोडक्शन बढ़े । कौन उन को सपोर्ट कर रहा है ? आप लोग ही उन को सपोर्ट कर रहे हैं । ऐसा होने से गरीब तो भूखा मरेगा । आप लोग कहते हैं कि 40 परसेंट लोग गरीबी की लाइन के नीचे हैं तो 60 परसेंट तो हम ने ऊपर उठा दिये । क्या आप ने उन 60 परसेंट को ऊपर उठाया है ? किस ने उठा दिया गरीबी की लाइन से ऊपर इन 60 परसेंट को ? क्या कभी किसी ने कहा है कि 60 परसेंट गरीबी की लाइन के ऊपर लोग चले गये हैं कांग्रेसी शासन में ? आज अगर आप को मुल्क की तरक्की करनी है और उस का साथ देना है तो आप लोग अपने दिलों का निरीक्षण कीजिए । आप मुल्क के रहनुमाओं के बताये रास्ते पर चलिये । बड़े बड़ आंकड़े दे कर हमारे राष्ट्रपति जी ने अपील की है कि आज हिन्दुस्तान की जो सामान्य जनता है उस को मिल कर, एक जुट हो कर मुकाबला करना है समस्याओं का, गरीबी का और अगर यह मुल्क हमारा है तो यह आप का भी है । मुल्क में हमारे बच्चे भी रहेंगे और आप के भी रहेंगे । मुल्क ही नहीं रहेगा तो आप कहां रहेंगे ।

Pandit Jawaharlal Nehru has rightly **•aid, who dies if India Ures** and who **lives** if India dies. You follow this. This is the time for you to follow this. Therefore, I appeaj to all my friends to discard such forces who come here with rampant communal attitude, who come here with the attitude of hatred for the backward classes and the Scheduled Castes and SeheduleJ Tribes, who come here for the disintegration of the country. We will never cooperate with you. Through you, Madam Vice-Chairman, I will once again appeal to my hon. friends that once we are talking of the Presidential Address, who should take stock of all that has happened during the past year. The Government may put forward certain claims, the Government may say that this has been done,, but then you can always suggest how things could be done in a better way, but you are not suggesting anything, you only saying that as if nothing has happened during the last 32 years. Thi* should not be there. Therefore, we must take stock of all that the hon. Rashtrapati has said, how the Government could have fared better, how we could convert our energies for the betterment of this country. This is th© approach that is needed. Otherwise, you will have to repetot, you may not be serious today bat our future generation will not forgive your party.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आपको बधाई इस बात की है कि गप्प मारने और गलत बात करने में आप बहुत पक्के हैं। बधाई देता हूं आप को कि बहुत अच्छी आदत है आप को गप्प मारने की।

SHRI R. MOHANARANGAM: Madam Vice-Chairman^ I am very glad that exactly At 4.00 p.m. you have given me an opportunity to speak on the Presidential Address. I really appreciate what Shri Bhardwaj stated in the very beginning that even though he was ia a position to speak in English, even though it was his usual practice to speak in English on the floor of the House, now he would speak in Hindi only. Unfortunately, I begin to speak only in English language and not in my mother tongue, namely Tamil, because as 1 have already said, if I speak in Tamil, most of the hon. Members would not understand the feelings expreosed by me here. That is why, Madam Vice-Chairman, I begin to speak in English. I could express myself better in Tamil language but here 1 would begin to make some of the points in English so that it is easy for all the hon. Members to understand me.

In fact, while dealing with the various aspects of the Presidential Addres*, 1 wanted to speak about certain maojr items only but my friend, Mr. Pandey, raised the language issue of this nation.

SHRI R. RAMAKRISHNAN: With due respect to my hon. friend Mr. Kalp Nath Rai, Minister for Parliamentary Affairs, it is very sad that when my party deputy leader is speaking, who is representing five crores of people from Tamil Nadu, there is no Minister of the Cabinet rank to take note of his speech on the Presidential Address.

SHRi SAT PAUL MITTAL (Punjab): The State Minister is here.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. (SHRIMATI) NAJMA HEPTULLA): The Leader of the House is in a meeting.

SHRI R. MOHANARANGAM: I understand that Mr. Kalp Nath Rai is representing the entire Cabinet here, whether he rt temporary or permanent whether he is going to be shuffled or included in any other Cabinet, I do not know. I feel that Mr. Kalp Nath Rai is present here and he will definitely convey my message to the persons or to the Members of the Cabinet who are absent today here.

Talking about the language issue, I would like to ask some of my friends here, especially the friends from this side, why actually when I speak about the language issue they all join together and attack me. There is a convention that a Member will not be disturbed by the time when he delivers his maiden speech here. Since this is my maiden speech after my reinstatement, I feel that most of the Members will not interfere by the time...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SHRIMATI) NAJMA HEPTULLA): How many maiden speeches do you want to have in one Session?

SHRI R. MOHANARANGAM: Just now my friend, Mr. Bhardwaj, talked so much about national integration and the struggle for freedom of this country. He talked about Indian history and about the freedom fighters who had struggled for the freedom of this country and all other things. As a man who had not been given an opportunity to fight for the freedom struggle because I have not yet crossed 48 years, but my father was a freedom fighter and since 1 belong to that particular family, I want to say that I have faith, that I have an affinity towards this country. I am first an Indian and then only I call myself a Tamilian. Sp on this assurance, when I begin to say something about the language issue, I would ask my friends not to think anything bad of me, or pass any bad remarks about my opinion with regard to the languages issue.

As I have said already, I am coming from the deep southern part of this country. Now I am speaking in a place which is 1200 miles away from my native place.

When I come here and when I cross the entire frontierSj when I cross so many States and come here, I find in Delhi Parliament, most of the Members who can speak English better than me, who know English better than me and who have studied in foreign universities, begin to speak only in Hindi language. Mr. Bhardwaj who spoke for more than 20 minutes very elaborately, very firmly very clearly, very lucidly, expresed his ideas in Hindi which I could not understand. Sometime, when I crossed swords with Mr. Pandey, my friend Mr. Mathur and some of my friends were laughing. Actually I did not know what for they were laughing. By the time I heard from the translation and begin to laugh, they were again laughing at me. That is the situation; that is the traslation. I do not blame anybody. It is only an interpretation; it is not translation, but only an essence of the speech that is given in interpretation and not the entire translation. This is not the mistake of the person who translates it; this is the mistake of the language controversy; this is the mistake of so many languages prevailing in the country.

Sir, as I said, I am coming from the deep southern part of this country. [The Vice-Chairman (Shri Ladli Mohan Nigam) in the Chair.]

My mother tongue is Tamil. A friend here when he talked about language said that Hindi should be respected. 1 too agree. 1 do not have any animosity, 1 do not have any hatred, I do not have any ill feeling towards that language. But I love my language like you love other Indian languages. I cannot love or. I cannot give extra importance to Hindi language than my mother tongue. Here when I come here, automatically I am expected to give importance or additional importance to this particular language. When I travel from Madras to Delhi by air, the air hostess simply speaks in Hindi only, within the territory of my own State. When 1 cross Tamil Nadu I do not hear the sweet Telugu language. The language I hear is only Hindi language whenever I cross, whenever I travel through the length and breadth of the country. I am not talking of Delhi, but even in my own State when I switch on the button of my T.V. exactly at 8 o'clock, that too in the middle of a Tamil picture, there comes a sign which says something about national integration. What is national integration? As a student of constitutional history, I know full well that it is the Government which is speaking through the President. If at all I pass any remark, bitter or otherwise, kindly don't think that I am remarking of telling anything against the President's Address. But I am just telling about the Government's attitude. When I speak about Government's attitude. I do not blame Mrs. Gandhi because I like Mrs. Gandhi, I give great respect to Mrs. Gandhi. I am a member of a family which fought for freedom and I need not say anything about the glorious Part played by that glorious man, Pandit lawaharlal Nehru. What I say is, why should you just completely impose this particular language? When I have a hoary language called Tamil in which my forefathers spoke and in which our poets gave sermons and scriptures, I am not going to sleep unless and until that language is going to be given that much importance as you come forward to give importance only to your language.

4 P.M.

When I switch on my TV exactly at eight o'clock$_i$ the face of a lady appears and she says, "In the name of national integration I am going to say something about this." What is national integration? Will national integration come here, will national integration enter the minds of thousamds and thousands of Indians only through a particular language? As I told already, my mother tongue is Tamil which is a sweet language in the whole of the country. I have studied that ancient language, a very heary language. In fact, 1 did not want to rake up this issue, but because a particular gentleman raked up this issue I am telling you that unless and until th©' attitude of the Hindi fanatics changes, India will not be one. I want India to be one. That is why, Sir, when I press this point, my friend,Mr. Bhardwaj, should not come to the conclusion that I am fighting against unification of the nation. I am for the unification of

[Shri R. Mohanarangam]

the nation) I am for the unity of the nation. That is why I have travelled from Madras across the frontiers of Andhra Pradesh, Orissa, Bihar and other places. If anybody speaks in English or Hindi I will not bother. But in my own State when I travelled from Madras airport to Madurai—there were only 52 passengers a lady came there in the plane and requested all the passengers to fasten their belts. This she did in Hindi. Where did I travel? I travelled in my own State. I am asking these Hindi-speaking people in the name of national integration, in the name of national unity. From Madras I went to Madurai—the very famous, historic place where the Pandyas ruled, the place where Meenakshi exists to preserve and protect the people of Tamil Nadu. But no announcement was made in Tamil in the plane. All the passengers were asked to fasten their belts—only in Hindi or in English in my own State. Do you mean to say that if an air hostess in your State of Uttar Pradesh, Bihar or Madhya Pradesh where the majority of people speak Hindi and where the regional language is Hindi, says in Telugu or Tamil that all the passengers are requested to fasten their belts, will you tolerate it? We have been tolerating this for the past 35 years since independence. Will you tolerate it? Touch your heart and tell me, will any one of you tolerate it if an air hostess speaks in Tamil or in a language other than Hindi? You will not tolerate it. But we are second rate citizens in this country. Not only this. We have been tolerating so many other things.

Just now I have received information that even in the Chartered Accountants' examination—it is an All-India examination—Hindi is going, to be introduced, for appearing in the examination. WIH it be all right? Sir, so far I have said something about the language issue. I will take up one by one.

I find that the Cabinet Minister, Mr. Shiv Shankar, the Minister of Energy, is also here. I think he will definitely understand my feelings. Still, I completely de^ pend upon our Prime Minister who alone can definitely tackle my problem. It Mr. Shiv Shankar cornes forward and says something or supports my feelings, you will not understand it because, unfortunately, he belongs to an area where Hindi is not the main language. That is why, Sit, I will not ask anybody to support me. I wam the Support of the Hindi-speaking people. You say that India is one. I do understand. From the_ lofty peaks of the Himalayas to the sacred shores of Kanya Kumari, India is one, the length and breadth of this country is one. Your brothers, thd Tamilians, are suffering for the past two months without rice. Have you ever heard the price of rice at eigth rupees a kilo? At Madurai rice is selling at eight rupees per kilo. We have been asking our Agriculture Minister for it for the past one and a half months. Even our Prime Minister does not know exactly how things are going on, because the officers are misleading them. They are the IAS officers. They are misleading the Ministers. They do not tell them the actual position. I do not know what the actual steps taken are and at what stage the matter now stands. I do not know anything about it. If you do not send rice within a week, if you do not send rice as was promised 20 days back our brothers and sisters in the entire Tamil Nadu will suffer. I hope it will be taken note of because India is one. I feel that Tamil Nadu is also part and parcel of this country. I ask the Agriculture Minister through our Petroleum Minister who is present here to transmit our sentimental feelings to the Agriculture Minister to send at once a lakh of tonnes, or even 50,000 tonnes, at Madras, whereby we can solve our problem, if you are really interested in the national integration of the country.

Another thing. Is it not a fact that just a week ago someone pointed out that there was talk that all the rivers be nationalized. In Tamil Nadu we do not have the Cauvery, we do not have the Krishna, we do not have the Godavari. We do not have coal-fields. We do not have any other natural resources. We have land resources, out of which We are somehow managing the affairs of 6ar State. We are asking for the Cauvtry

water from Karnataka. We arc begging them for some water. We are asking Andhra Pradesh just to give us some water from the Krishna. I do not know how long it will take. Perhaps more than 20-25 years. We have to spend thousands and thousands of crores of rupees. This is the situation. Without water, without rice, we have been suffering for the past three months. If such a situation is there in Haryana, the Minister who is responsible for Agriculture will at onces send help there. But, because I belong to a place which is far away from Delhi, we are not cared for. That is why we have been asking for a change in the capital from Delhi to Hyderabad or Bangalore. Then we can understand the entire situation.

And, Sir, I do not understand what exactly is the industrial development of this country. After 1947, for the past 35 years, we have been spending crores and crores of rupees for the development of this country. States reorganization came. We have splitted our country into several parts in the name of languages. Now there are 87 backward districts in the whole of India. I was just turning the pages of a booklet where they have mentioned 87 districts as backward. There 1 found that not even a single district of Tamil Nadu has been mentioned. This when fhe entire districts in Tamil Nadu are the most backward districts in the country. But not even a single one has been mentioned there. That is why they have transferred this Hindustan Photos, a very big factory, which was already established to Nainital. But even Nainital was not there in the list of 87. I do not know for what reasons ft has been clang-ed.

SHRI BUDDHA PRIYA MAURYA: Expansion only, I believe.

SHRI R. MOHANARANGAM: If at all that is so, you expand an industry which is already existing. This is what I know about English. According to the English dictionary expansion is quite separate from starting. I do not know much English. Our Law Minister is there. But I feel that expansion is quite different

from Starting a new industry. Just because it was Nainital, it happened. It happened because Nainital is the district of our Industry Minister. And when we apply for indstrial licences, they are not given. There are still 47 indstrial licences pending for Tamil Nadu. So many things were promised by them at the time of election. Then they say that Tamil Nadu is not developing as far as industry is concerned. When 47 licences have not been issued in the State, how can we deveolp industrially? They want that Congress Party should rule in the State. Here we are supporting the good policies and Congressmen. They should give licences. For 48 industries they have not given licences so far.

Mr. Mittal was here. He was talking about family planning. Our Government came forward to implement it very very vigorously. We are implementing the 20-point programmes. It is one of the programmes there. We have reduced our population. The population of Tamil Nadu even after 15 years is only 4.2 crores. Even Mr. Mittal was praising the steps taken by our Government with regard to the family planning. The result is that we have not been given any certificate or we have not been given any laurels of we have not been given any gold medate. But Mr. Vice Chairman, they have reduced two seats from our Parliament quota. Because there was no sufficient growth in population, thye have reduced two seats from 41 to 39 in the Lok Sabha. Previously it was 41. Because the population was less the seats were reduced.

There is a wonderful thing about our mass media and the All-India Radio, Our Minister is not here. I do not know what he wants to convey. When he gives orders to implement certain things to the All-India Radio and the TV especially, Sir, when they talk something about national unity through TV, actually speaking most of the educated persons, most of the upper middle class people who own TV, just close their TV sets. They do not listen to that because this unity broadcasts come* only from other different languages, languages which we actually do not know. Therefore, I request our Information

[Shri R. Mohanarangam]

Minister that unity can be created through our mother tongue. You tell the same thing, the same story the same freedom struggle or some documentary through my own language. In 1971 and 1976 aggressions were there. We have supported strongly the Government on Indian stand to fight against the Chinese. Have we not done anything? Are we second to anybody here to support the Indian Government? But you want to introduce your own language throughout the country spoiling the entire atmosphere.

About the Customs Offices, I expect the Finance Minister to be here. There is one officer in our State. If any foreigners come to our country or if any Indians who goes to a foreign country and comes back to our country, they will come through Calcutta or through Bombay, but not through Madras, Because only one or two flights are coming from foreign countries, this Customs office people do not have any work there. They just open each and every box, open each and every page of books and see whether the passengers have concealed anything there. The passengers received that much of harassment at the hands of the Madras Customs. There is one officer by name, Saldana. Thinking that he is the perfect gentleman of cent percent purity, is creating all sorts of complications inside the airport and the harbour and is giving all sorts of trouble *to* passengers. That is why foreigners never go to Madras. They go to different places. Only they are benefited, and we are not benefited because of the ill-treatment of the officers. I would request the Finance Minister tO' take action against those persons who are unnecessarily creating all sorts of complications and giving harassment to the passengers *(Time balls rings).*

Not even 15 minutes passed, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI LADLI MOHAN NIGAM): I have just gtven you a warning.

SHRI R. MOHANARANGAM: Sir, you can give me some concession because if I speak in my mother tongue, I can speak faster, but if I speak in another language, I take much time.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI LADLI MOHAN NIGAM): You caa speak in Tamil.

SHRI R. MOHANARANGAM: Sir, we have in our State rose-wood and sandal-wood in abundance. To protect the interests of some parties in my neighbouring State, the Government of India banned export of Sandal-wood to foreign countries. Thereby we are loosing crores and crores of rupees of foreign exchange. But recently they have banned export of rosewood. Rosewood is something which a middle class man cannot purchase very easily. It costs thousands and thousands of rupees. The seat where you are sitting, Mr. Vice-Chairman, is also made of rosewood. A small piece of rosewood costs Rs. 1,000 to Rs. 2,000. The Government of India has banned the entire rosewood business and hereafter the State Government cannot export rosewood to foreign- countries. Thereby we lose so many things. It is *my* request through you that the ban on export of sandalwood and rosewood should be removed. This should be done immediately so as to enable the business people of my area to carry on their business transactions there.

Sir, someone here talked about an anti-defection law. A person after getting elected changes from one party to another causing an unpleasant political atmosphere. On getting success in the elections, after getting votes from a particular section of the people, an individual defects from one party to another, thereby violating the moral rules and regulations. On the floor of this Parliament we should pass a law that will prevent persons going from one party to another party. If at all anybody goes from one party to another, he should resign his post and then only he should go to some other party. When persons, after getting votes from one section of the people, go to another party, they create an unpleasant political atmosphere. That should be stopped. Sir, this is the first speech of our President. He has omitted so many things in his Address.

Since this is his first Address, and as it is my first speech, I say that our President, who is the custodian of the Constitution also, with the help of our Government headed by our Prime Minister, should take up the entire responsibility of creating a national atmosphere, an atmosphere whereby we can create natonal unity, an atmosphere whereby we can created a protherhood feeling, an atmosphere whereby we can create amity aud affection. When we do that, I feel our country will be one, lndia will be one, for which our share will not be less than that of any section of the country.

DR. SARUP SINGH (Haryana): There is a tradition that we cheer a maiden speech.

SHRI R. MOHANARANGAM: I was reinstated, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRl LADLI MOHAN NIGAM): Shri Rahmat Ali.

श्री सैयद रहमत अली :
"वतन की फिक्र कर नादां मुसीबत आने वाली है तुम्हारी बरबादियों के मश्विरे हैं आस- मानों में"

जनाब मोहतरिम वाइस चेयरमैन साहब, सदरे जम्हूरिया ने पार्लियामेंट के मुश्तरिके इजलास को मुखातिब करते हुए कौम और मुल्क को जिन खतरात से आगाह किया है उन पर बिना तखसीस हर शहरी को तवज्जह देना है। हम सदरे जम्हूरिया का शुक्रगुजार हैं कि उन्होंने अपने खुतबे में मुल्क आंज अंद-रूनी तौर पर जिन हालात से दो चार है और दुनिया के सामने कैसे कठिन मसायल हैं और दुनिया की बड़ी ताकतों द्वारा हिन्दुस्तान की जो शाहराए तरक्की पर तेज रफ्तार के साथ उठते हुए कदम हैं उस रास्ते पर जो रूकावटें खड़ी किये जाने का अंदेशा उसकी तरफ इंतबा दिया है। जनाब वाइस चेयरमैन साहब मैं बड़े दुख और अफसोस के साथ अर्ज करना चाहता हूं कि हम पार्लियामेंट में अवाम के नुमाइंदे की हैसियत से यहां मुल्क और कौम की खिदमत करने के लिए आये हैं। उन्होंने सदरे जम्हूरिया के खुतबे के बारे में खास तौर पर हमारी अपोजीशन पा-र्टियों से ताल्लुक रखने वाले बुजुर्गों और दोस्तो ने जिन ख्यालात का इजहार किया है, अगर हम उनका जायजा लेंगे, तो मैं बड़े दुख के साथ यह बात कहना चाहता हूं कि सदरे जम्हुरिया की अपील पर हमारे अपोजीशन पार्टियों से वाबस्ता दोस्तों ने त्वज्जह नहीं दी है।

सदरे जम्हूरिया ने हमारे सामने जो चेलेंजेज हैं और काम करने के जो मवाके हैं, उसकी तरफ इशारा करते हुए यह बात बतलाई है कि पार्लियामेंट को, हकूमत को और आवाम को बाहमी तआवुने अमल के साथ मिलजुलकर शहराहे तरीके पर गाम-जन रखने के अकीदे को निभांना है। सदरे जम्हूरियत से जाहिर है कि मुल्क में आज फिरकाप्रस्ती के तशद्दुत का इंतशार फैलाने वाले जो जहन हैं, उसकी तरफ इशारा किया है। लेकिन वह इन जमातों की तरफ इशारा नहीं कर सके। वाजया तौर पर मुल्क में इंतशार फैलाने वाली, तशद्दत को हवा देने वाली, खून-खराबा कराने वाली कौन सी जमातें और कौन सी शक्तियां हैं। मैं बहुत मुब्दवाना तौर पर सिर्फ इस बात की गुजारिश करना चाहता हूं कि जो मुल्क में फिर-काप्रस्ती की लानत को फैलाना चाहते हैं, जो हमारी शमाल, जनूब और शमाल-मरगबी की रियासतों में जो आज हंगामा कराने के लिए कोशिशें की जा रही हैं, इसमें हमें अपने दिलों को टटोलते हुए इस बात का जाय जा लेना पड़ेगा कि हमारे मुल्क का वह कौन सा जहन

[श्री सैयद रहमत अली]

है, वह कौन सी सियासी पार्टियां हैं, जो इस इंतशार को फैलाने और आम करने में हिस्सा ले रही हैं? क्या वह तबकात, जहन और वह जमातें इस बात को नहीं महसूस करती हैं कि अगर हिंदुस्तान में इस किस्म के दंगे फिसाद और हिंदुस्तान में कतलों-खून का बाजार गर्म होता है और आइने-जम्हूरी तरीकों के बजाय हम गलियों में तशद्दुद को सिर उठाने का मौका देते हैं, तो इससे फायदा कौन सी शक्तियां उठाना चाहती हैं।

आपको मालूम है कि जो गैर-जानिबदार खारिजा मुल्कों की कॉन्फ्रेंस हिन्दुस्तान में दिल्ली में होने जा रही है, उसके बारे में कुछ दोस्तों ने मजाहिया अंदाज से उसका तपसरा किया है। मैं यह बात कहना चाहता हूं कि आज बड़ी शक्तियां—अब से नहीं बल्कि हिंदुस्तान की आजादी के फौरी बाद से जब कि पं० जवाहरलाल नेहरू ने हिंदुस्तान की सरजमीन से गैर-जानिबदार खारिजा पालिसी इलान की थी, तो बड़ी शक्तियां यह चाहती थीं कि हिंदुस्तान को अपने किसी न किसी ग्रुप में शामिल कर लिया जाए। लेकिन हिंदुस्तान साबित कदमी के साथ आजाद-गैर जानिबदार खारिजा पालिसी पर चलता रहा और आज इसकी वजह से न सिर्फ हिंदुस्तान की इज्जत में इजाफा हुआ है, बल्कि जो गैर-जानिबदार खारिजा पालिसी रखने वाले मुमालिक हैं, उन मुमालिक को भी अपने मुल्कों में और अपनी कौम को तरक्की के रास्ते पर ले चलने का मौका मिला है। लेकिन जो आज तशद्दुद के वाक्यात हैं, या फिर फिरकापरस्ती और इलाकाई फिसादात की वजह से हिंदुस्तान में जो इंतशार हो रहा है, बाहरी शक्तियां हिन्दुस्तान को अपने किसी न किसी ग्रुप में शामिल करने की दरपे हैं। इससे हमें आगाह होना पड़ेगा, इससे हमें चौकस रहना पड़ेगा।

मैं दुख दर्द के साथ यह बात अर्ज करना चाहता हूं कि अभी तमिल नाडु के हमारे दोस्त ने हिंदी के बारे में जिन ख्यालात का इजहार किया, यही तस्वीर है, यही जहन है जिसकी इलाकाई पासमंदगी की वजह से हम यह महसूस करते हैं कि यह पूरे मुल्क की कौमी वहदत के लिए, हमारी नेशनल इन्टेगरेशन के लिए, हमारी कौमी यकजहती के लिए खतरा है, लानत है।

आन्ध्र प्रदेश से मेरा ताल्लुक है, आन्ध्र में क्या हुआ। आन्ध्र में कांग्रेस को नाकामी हुई। इसका हमें कोई सकासियासी जमात की हैसीयत से हम इस बात को गवारा करने के लिए तैयार हैं कि हम पावर में रहें या न रहें, लेकिन हम अपोजीशन में रहते हुए भी आवाम की खिदमत का हौसला अपने में रखते हैं। लेकिन, जनाब, मैं आपको एक खतरे की बात बतलाना चाहता हूं कि एन० टी० रामाराव ने जो इलाकापरस्ती को हवा दी—उनका अगर मेनिफेस्टो हमारे बुजुर्गों की नजर से गुजरा है, तो शायद वह यह महसूस करेंगे कि एन० टी० रामाराओं ने यह बात कही कि वह रियासत में इस किस्म की अटोनोमी चाहते हैं कि आन्ध्र प्रदेश में सिक्का, ठप्पा, उमरे खारिजा और दफा, यह चार चीजें मरकजी हकूमत अपने पास रखे और रियासत को मुकम्मिल खुदमुखतयारी दे दी जाए तथा अब आप गौर कीजिए कि जो नशेबोफराज और वाक्यात पर नजर रखते हैं, मैं उनकी याददाश्त को दावते फिक्र देता हूं। और यह बात याद दिलाना चाहता हूं

कि आन्ध्र प्रदेश में जब रियासत हैदराबाद में निजाम की हुकूमत थी उस वक्त निजाम की हुकूमत ने हिन्दुस्तान से वाबस्तगी करने के बजाय हिन्दुस्तान के ठाठें मारते समुद्र में एक मामूली सी बोट की तरह शामिल होने के बजाय रेसिस्ट किया था । इस वक्त हिन्दुस्तान के वजीर सरदार पटेल ने एक एग्रीमेंट निजाम की सरकार के सामने पेश किया था और आज एन॰ टी॰ रामाराओ इलाकावारियत को फैलाते हुए हिन्दुस्तान से आन्ध्र प्रदेश को अलग करना चाहता है या हिन्दी के मुतालिक साउथ की नापसन्दगी का रुझान पेश करना चाहता है।

श्री बी सत्यनारायण रेड्डी (आन्ध्र प्रदेश) : हिन्दुस्तान से आंन्ध्र प्रदेश को अलग नहीं करना चाहता है। तेलगू देशम पार्टी का यह मकसद नहीं है । वह उतने ही देशभक्त हैं जितने हम और आप हैं ।

श्री सैयद रहमत अली : मैं आप की खुशफहमी को दूर कर दूं कि मैं आप की तरह गलतफहमी का शिकार नहीं हूं । मैं पोलिटिकल वर्कर आप के साथ ही रहा हूं। पोलिटिकल जिन्दगी मैं ने आपकी ही जैसे दोस्तों के साथ शुरू की है । इस लिए मैं यह बात कहना चाहता हूं कि उन्होंने जिस आटोनोमी की मांग की है वह आटोनोमी आन्ध्र प्रदेश को या साउथ की दूसरी रियासतों को अलग करने की एक ऐसी शर्मनाक हरकत है जिस को हिन्दुस्तान का अवाम बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है । इस लिए हम यह बात अर्ज करना चाहते हैं कि हमारा किसी भी सियासी जमात से ताल्लुक क्यों न हो, हमारे सामने यह बात होनी चाहिए कि मुल्क आगे बढ़े, कौम तरक्की करे । लिसानी बातों को ले कर--सीट के खातिर, गद्दी की खातिर आप कौम में इन्शार पैदा करना चाहते हैं, कौम में कमजोरी लाना चाहते हैं कौम में तसद्दुद को उभारना चाहते हैं। इस तशद्दुद का फायदा बड़ी ताकतें उठाती हैं । उन की यह कोशिश है कि गैरजानिबदार अफेशियाई मुमालिक को जो बाइज्जत तौर पर सिर उभारने का मौका है उन को उस रास्ते से हटाया जाय ।

क्या हम इस बात को भूल जायें कि आर्ज जंग दस्तक देने लगी हिन्दुस्तान की सरहदों पर । क्या हम इस बात को नजरन्दाज कर सकते हैं कि बड़ी ताकतों ने पाकिस्तान को एफ-16 दिये हैं जो हमारी इलाकाई सालमियत के लिए, हमारी कौमी यकजहती के लिए खतरात हैं? क्या हम उन की तरफ से आंख बन्द कर सकते हैं?

मैं चाहूंगा कि जो करीब 200 तरमीमात सदर जम्हूरिया के खुतबे में अपोजीशन के दोस्तों ने दी हैं उन पर वह ठंडे दिल से गौर करें कि उन तरमीमात का मसकद क्या है, उन तरमीमात के जरिए वह क्या चाहते हैं । मैं तफसीलात में जाऊ तो वक्त मेरा साथ नहीं देगा। वह ऐसी ऐसी बातों को शामिल करना चाहते हैं जिन का तजकिरा हम नहीं कर सकते । हिन्दुस्तान में अगर कहीं इस्मतरेजी की जा रही है तो उस का जिक्र खुतबे में क्यों नहीं आया । इस बात को शामिल करने की बात करने वाले अपने सियासी फरायज को भूल गये, यह बात मैं पूछना चाहता हूं । यह भी कहा गया है कि दत्ता सामान्त की तरफ से बम्बई की मिलों में जो स्ट्राइक चल रही है उस के बारे में सदरे जम्हूरिया ने अपने खुतबे में जिक्र क्यों नहीं किया । मैं अजब के

[श्री सैयद रहमत अली]

साथ यह बात कहना चाहता हूं कि मैं ने एक-एक तरमीम को तफसील के साथ पढ़ा है । हर तरमीम के बारे में बड़े एहतराम से कहना चाहूंगा कि आप इस हाउस का वक्त जाया करना चाहते हैं । इस हाउस के एक मिनट पर 800 रुपए खर्च होते हैं । आप अवाम के नुमाइंदे बन कर आये हैं । मुझे बड़ी खुशी होती कि अगर अपोजीशन की तरफ से जो तरमीम पेश की गयी है उन में से एक-आध तरमीम में भी काम की चीज होती । सारी की सारी तरमीमें ऐसा मालूम होता है, वक्त को, जरायों को, वसायल को जाया करने के लिए दी गयी हैं । मैं यह बात अर्ज करना चाहता हूं कि सदरे जम्हूरिया ने गुजिश्ता साल जो हुकूमत के कामों में तरक्की हुई है उन का अपने खुत में जिक्र किया है और आइंदा साल हम क्या करना चाहते हैं उसके बारे में तफसीली बातें रखी हैं । मैं अदब के साथ यह बात अर्ज कर दूं कि कपड़ा मिलों की हड़ताल या आसाम में जो आन्दोलन चल रहा है उस की बात को या जुनूं में इलाकापरस्ती का भूत सिर उभार रहा है उसे एक हिन्दुस्तानी की हैसियत से हमें देखना है । मेरी मादरी जबान उर्दू है, किसी की मादरी जबान तमिल है, हो सकता है कि जबान अलग हो, हो सकता है कि मजहब अलग हो, लेकिन हम सब मिली-जुली एक कल्चर के बाशिन्दे हैं, एक माशरे के, एक सोसाइटी की दाई हैं और उस सोसायटी के दाई की हैसियत से हमें मादरे वतन की खिदमत करनी है । और मादरे वतन की खिदमत करना है । मुझे यकीन है कि सदरे जमहूरिया ने जो खुतबा दिया है उस में बुनियादी कदरों को मजबूत करते हुए उम्मीद जाहिर की गयी है कि यहां के तमाम अवाम और कारकुन और नुमाइन्दे अपने अपने फर्ज को निभाने की कोशिश करेंगे । मुझे यकीन है कि जो तरमीमात इस खुतबे के मुताल्लिक पेश की गयी हैं उन्हें अपोजीशन के लोग वापस लेते हुए कौम को तबाह होने से बचायेंगे और हम शुक्रगुजार हैं सदरे जमहूरिया के और मुझे यकीन है कि हमारी मुल्क की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की रहनुमाई में न सिर्फ हम मुल्क को ऊंचाई की बुलंदियों की तरफ ले जायेंगे बल्कि जो जंग के बादलों से डरी हुई और सहमी हुई इंसानियत है उस डरी हुई और सहमी हुई इंसानियत को श्रीमती इन्दिरा गांधी की रहनुमाई में "जियो और जीने दो" के तरीकेकार को समझाते हुए हम ईमानदारी के परचम को उठायेंगे और ईमानदारी की ताकतों को मजबूत बनायेंगे । मैं अपने अपोजीशन के दोस्तों से कहना चाहता हूं कि आज यह बात साफ है कि इस ऐवान में आप तनकीद करें यह आप का हक है । ऐवान के बाहर भी आप तनकीद करें, लेकिन मैं अदब के साथ यह बात अर्ज करना चाहता हूं कि इस ऐवान में जो तनकीदें होती हैं मैं अदब के साथ यह बात कहना चाहता हूं कि वह तनकीदें जमहूरियायी नुक्तेनिगाह से नहीं होतीं । इस ऐवान में जो तनकीदें की जाती हैं वे हड़बोंग की शकल अख्तियार कर लेती हैं और यहां के नुमाइन्दे इस ऐवान में हड़बोंग मचाने के लिये आयें तो आप ही सोचिये कि एक सियासी कारकुन की हैसियत से हम क्या कर रहे हैं और फिर आप को हुकुमत पर नुक्ता चीनी करने का ऐवान में और ऐवान के बाहर भी अख्तियार है और उस अख्तियार में अगर आप अपने हाथों में तशद्दुद का परचम ले लेते हैं और अगर आप तशद्दुत पर उतर आते हैं तो मेरे भाई, मैं पूछना चाहता हूं कि

हूं कि आप इस हिन्दुस्तान को किस किस्म का देश बनाना चाहते हैं। मैं आप से पूछना चाहता हूं कि आज असम में जो दंगे हो रहे हैं, वहां जो फसादात हो रहे हैं, वहां जो अकल्लियतों को तंग किया जा रहा है, आज पंजाब की सर जमीन पर जो मुजाहिदों की जमीन रही है, जहां लोगों को खतरनाक हालात से गुजरना पड़ रहा है, क्या अपोजीशन के लोगों को उस के लिये दुख है? नहीं। वह तो खुश हैं इस बात पर और वह मसर्रत महसूस करते हैं इस लिये कि असम जलता रहे, पंजाब जलता रहे और वहां हंगामे होते रहें। क्यों? इसलिये कि उन के दिलों में वजारत को परेशान करने का जज्बा है, इस को तंग करने की बात है और वह ऐसा कर के ही वजारत की गद्दी पर पहुंचना चाहते हैं। वह हुकुमत को तंग और परेशान करना चाहते हैं। लेकिन श्रीमती इन्दिरा गांधी दावत देती हैं तरक्की की तरफ, वे मुल्क को खुश-हाली की तरफ ले जाना चाहती हैं। आप के हाथ लोगों को मुसीबत का जामा पहनाना चाहते हैं, हम हिन्दुस्तान को तरक्की का रास्ता दिखाना चाहते हैं और यही वजह है कि मुल्क श्रीमती इन्दिरा गांधी की रहनुमाई में तरक्की कर रहा है। मैं सदरे जमहूरिया का शुक्रिया अदा करते हुए उन्होंने जो रास्ता बताया है, चाहता हूं कि मुल्क उस रास्ते पर चले और हम अपने मादरे वतन को खुशहाली की मंजिल तक इस तरह पहुंचा सकें।

†[شری سید رحمت علی :

وطن کی فکر کر نادان مصیبت آنے والی ہے
تیری بربادیوں کے مشورے ہیں آسمانوں میں -

محترم وائس چیرمین صاحب ،
صدر جمہوریہ نے پارلیمنٹ کے مشترکہ اجلاس کو مخاطب کرتے ہوئے قوم اور ملک کو جن خطرات سے آگاہ کیا ہے ان پر بلا تخصیص ہر شہری کو توجہ دینا ہے - ہم صدر جمہوریہ کے شکر گزار ہیں کہ انہوں نے اپنے خطبہ میں ملک آج اندرونی طور پر جن حالات سے دو چار ہے اور دنیا کے سامنے کیسے کٹھن مسائل ہیں اور دنیا کی بڑی طاقتیں ہندوستان کی جو شاہراہ ترقی پر تیز رفتار کے ساتھ اٹھتے ہوئے قدم ہیں - اس راستہ پر جو رکاوٹیں کھڑی کئے جانے کا اندیشہ ہے - اسکی طرف اشارہ دیا ہے - جناب وائس چیرمین صاحب میں بڑے دکھ اور افسوس کے ساتھ یہ بات عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ہم پارلیمنٹ میں عوام کے نمائندے کی حیثیت سے یہاں ملک اور قوم کی خدمت کرنے کیلئے آئے ہیں - انہوں نے صدر جمہوریہ کے خطبہ کے بارے میں— خاص طور پر ہماری اپوزیشن پارٹیوں سے تعلق رکھنے والے بزرگوں اور دوستوں نے جن خیالات کا اظہار کیا ہے ، اگر ہم انکا جائزہ لینگے ، تو میں بڑے دکھ کے ساتھ یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ صدر جمہوریہ کی اپیل پر ہمارے اپوزیشن پارٹیوں سے وابستہ دوستوں نے توجہ نہیں دی ہے -

صدر جمہوریہ نے ہمارے سامنے جو چیلنجز ہیں اور کام کرنے کے

†[Translation in Arabic Script]

[شری سید رحمت علی]

جو مواقع ہیں ، اسکی طرف اشارہ کرتے ہوئے یہ بات بتلائی ہے کہ پارلیمنٹ کو ، حکومت کو اور عوام کو باہمی تعاون عمل کے ساتھ مل جل کر شاہراہ طریقہ پر گامزن رکھنے کے عقیدہ کو نبھانا ہے - صدر جمہوریہ نے ظاہر ہے کہ ملک میں آج فرقہ پرستی کے تشدد کا انتشار پھیلانے والے جو ذہن ہیں ، اسکی طرف اشارہ کیا ہے - لیکن وہ ان جماعتوں کی طرف اشارہ نہیں کر سکے - واضع طور پر ملک میں انتشار پھیلانے والی ، تشدد کو ہوا دینے والی ، خون خرابہ کرنے والی کونسی جماعتیں اور کونسی شکتیاں ہیں ، میں بہت مودبانہ طور پر صرف اس بات کی گزارش کرنا چاہتا ہوں کہ جو ملک میں فرقہ پرستی کی لعنت کو پھیلانا چاہتے ہیں ، جو ہمارے شمال ، جنوب اور شمال مغرب کی ریاستوں میں جو آج ہنگامہ کرانے کے لئے کوششیں کی جا رہی ہیں، اسمیں ہمیں اپنے دلوں کو ٹٹولتے ہوئے اس بات کا جائزہ لینا پڑیگا کہ ہمارے ملک کا وہ کون سا ذہن ہے ، وہ کونسی سیاسی پارٹیاں ہیں ، جو اس انتشار کو پھیلانے اور عام کرنے میں حصہ لے رہی ہیں - کیا وہ طبقات ، وہ ذہن اور وہ جماعتیں اس بات کو نہیں محسوس کرتیں ہیں کہ اگر ہندوستان میں اس قسم کے دنگے فساد اور ہندوستان میں قتل و خون کا بازار گرم ہوتا رہے اور آئین جمہوری طریقوں کے بجائے ہم گاؤں میں تشدد کو سر پر اٹھانے کا موقعہ دیتے ہیں ، تو اس سے فائدہ کونسی شکتیاں اٹھانا چاہتی ہیں -

آپ کو معلوم ہے کہ جو غیر جانبدار خارجہ ملکوں کی کانفرنس ہندوستان میں دلی میں ہونے جا رہی ہے ، اس کے بارے میں کچھ دوستوں نے مذاحیہ انداز میں اس پر تبصرہ کیا ہے - میں یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ آج بڑی شکتیاں — اب سے نہیں بلکہ ہندوستان کی آزادی کے فوری بعد سے جب کہ پنڈت جواہر لال نہرو نے ہندوستان کی سر زمین سے غیر جانبدار خارجہ پالیسی اعلان کی تھی ، تو وہی شکتیاں یہ چاہتی تھیں کہ ہندوستان کو اپنے کسی نہ کسی گروپ میں شامل کر لیا جائے - لیکن ہندوستان ثابت قدمی کے ساتھ آزاد — غیر جانبدار خارجہ پالیسی پر چلتا رہا اور آج اس کی وجہ سے نہ صرف ہندوستان کی عزت میں اضافہ ہوا ہے بلکہ جو غیر جانبدار خارجہ پالیسی رکھنے والے ممالک ہیں ، ان ممالک کو بھی اپنے ملکوں میں اور اپنی قوم کو ترقی کے راستے پر لے چلنے کا موقعہ

ملا ہے - لیکن جو آج تشدد کے واقعات ہیں یا پھر فرقہ پرستی اور علاقائی فسادات کی وجہ سے ہندوستان میں جو انتشار ہو رہا ہے ، باہری شکتیاں ہندوستان کو اپنے کسی نہ کسی گروپ میں شامل کرنے کے درپے ہیں، اس سے ہمیں آگاہ ہونا پڑے گا ، اس سے ہمیں چوکس رہنا پڑے گا -

میں دکھ درد کے ساتھ یہ بات عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ابھی تامل ناڈو کے ہمارے ایک دوست نے ہندی کے بارے میں خیالات کا اظہار کیا ، یہی تصویر ہے ، یہی ذہن ہے جس کی علاقائی پسماندگی کی وجہ سے ہم یہ محسوس کرتے ہیں کہ یہ پوری ملک کی قومی وحدت کے لئے ، ہماری نیشنل انٹیگریشن کے لئے ، ہماری قومی یکجہتی کے لئے خطرہ ہے ، لعنت ہے -

آندھرا پردیش سے میرا تعلق ہے ، آندھرا میں کیا ہوا - آندھرا میں کانگریس کو ناکامی ہوئی اس کا ہمیں کوئی شخصیاتی ضمانت کی حیثیت سے ہم اس بات کو گوارہ کرنے کے لئے تیار ہیں کہ ہم پاور میں رہیں یا نہ رہیں، لیکن ہم اپوزیشن میں رہتے ہوئے بھی عوام کی خدمت کا حوصلہ اپنے میں رکھتے ہیں - لیکن، جناب، میں آپ کو ایک خطرہ کی بات بتلانا چاہتا ہوں کہ این- ٹی- راما راؤ نے جو علاقہ پرستی کو ہوا دی ان کا اگر مینیفیسٹو ہمارے بزرگوں کی نظر سے گزرا ہے ، تو شاید وہ یہ محسوس کریں گے کہ این - ٹی - راما راؤ نے یہ بات کہی کہ وہ ریاست میں اس قسم کی قانونی چاہتے ہیں کہ آندھرا پردیش میں سکہ ، ڈاک ، امورخارجہ اور دفاع ، یہ چار چیزیں مرکزی حکومت اپنے پاس رکھے اور ریاست کو مکمل خود مختاری دے دی جائے - اب آپ غور کیجئے کہ جو نشیب و فراز اور واقعات پر نظر رکھتے ہیں ، میں ان کی یادداشت کو دعوت فکر دیتا ہوں - اور یہ بات یاد دلانا چاہتا ہوں کہ آندھرا پردیش میں جب ریاست حیدرآباد میں نظام کی حکومت تھی اس وقت نظام کی حکومت نے ہندوستان سے وابستگی کرنے کے بجائے ہندوستان کے ٹھاٹھیں مارتے سمندر میں ایک معمولی سی بوٹ کی طرح شامل ہونے کے بجائے ریاست کہا تھا - اس وقت ہندوستان کے وزیر سردار پٹیل نے ایک ایگریمینٹ نظام کی سرکار کے سامنے پیش کیا تھا اور آج این - ٹی - راما راؤ علاقہ واریت کو پھیلاتے ہوئے ہندوستان سے آندھرا پردیش کو الگ کرنا چاہتا ہے یا ہندی کے متعلق ساؤتھ کی ناپسندیدگی کا رجحان پیش کرنا چاہتا ہے -

شری بی - ستیہ نارائن ریڈی : ہندوستان سے آندھرا پردیش کو الگ نہیں کرنا چاہتا ہے - تیلگو دیشم پارٹی کا یہ مقصد نہیں ہے وہ اتنے ہی دیش بھگت ہیں جتنے ہم اور آپ ہیں -

شری سید رحمت علی : میں آپکی خوش فہمی کو دور کر دوں کہ میں آپکی طرح غلط فہمی کا شکار نہیں ہوں - میں پولیٹیکل ورکر آپکے ساتھ ہی رہا ہوں - پولیٹیکل زندگی میں نے آپ ہی جیسے دوستوں کے ساتھ شروع کی ہے - اسلئے میں یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ انہوں نے جس آٹونومی کی مانگ کی ہے- وہ آٹونومی آندھرا پردیش کو یا ساؤتھ کی دوسری ریاستوں کو الگ کرنے کی ایک ایسی خطرناک حرکت ہے جسکو ہندوستان کا عوام برداشت کرنے کے لئے تیار نہیں ہے- اسلئے ہم یہ بات عرض کرنا چاہتے ہیں کہ ہمارا کسی بھی سیاسی جماعت سے تعلق کیوں نہ ہو، ہمارے سامنے یہ بات ہونی چاہئے کہ ملک آگے بڑھے، قوم ترقی کرے، لسانی باتوں کو لیکر— سمت کی خاطر، گدی کی خاطر، آپ قوم میں انتشار پیدا کرنا چاہتے ہیں، قوم میں کمزوری لانا چاہتے ہیں، قوم میں تشدد کو ابھارنا چاہتے ہیں، اس تشدد کا فائدہ بڑی طاقتیں اٹھاتی ہیں - انکی یہ کوشش ہے کہ غیر جانبدار افریشائی ممالک کو جو با عزت طور پر سر ابھارنے کا موقعہ ہے انکو اس رستے سے ہٹایا جائے -

کیا ہم اس بات کو بھول جائیں کہ آج جنگ دستک دینے لگی ہے - ہندوستان کی سرحدوں پر - کیا ہم اس بات کو نظر انداز کر سکتے ہیں کہ بڑی طاقتوں نے پاکستان کو ایف - ١٦ دیئے ہیں جو ہماری علاقائی سالمیت کیلئے، ہماری قومی یکجہتی کیلئے خطرہ ہیں ؟ کیا ہم انکی طرف سے آنکھ بند کر سکتے ہیں ؟

میں چاہونگا کہ قریب دو سو ترمیمات صدر جمہوریہ کے خطبے میں اپوزیشن کے دوستوں نے دی ہیں ان پر وہ ٹھنڈے دل سے غور کریں کہ ان ترمیمات کا مقصد کیا ہے ؟ ان ترمیمات کے ذریعہ وہ کیا چاہتے ہیں - میں تفصیلات میں جاؤں تو وقت میرا ساتھ نہیں دے گا - وہ ایسی ایسی باتوں کو شامل کرنا چاہتے ہیں جن کا تذکرہ ہم نہیں کرسکتے - ہندوستان میں اگر کہیں عصمت ریزی کی جا رہی ہے تو اس کا ذکر خطبے میں کیوں نہیں آیا - اس بات کو شامل کرنے کی بات کرنے والے اپنے سیاسی فرائض کو بھول گئے - یہ بات میں پوچھنا چاہتا ہوں - یہ بھی

کہا گیا ہے کہ دتا سامنت کی طرف سے بمبئی کی ملوں میں جو اسٹرائک چل رہی ہے اس کے بارے میں صدر جمہوریہ نے اپنے خطبے میں ذکر کیوں نہیں کیا - میں ادب کے ساتھ یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ میں ایک ایک ترمیم کو تفصیل کے ساتھ پڑھا ہے- ہر ترمیم کے بارے میں بڑے احترام سے کہنا چاہوں گا کہ آپ اس ہاؤس کا وقت ضائع کرنا چاہتے ہیں- اس ہاؤس کے ایک منٹ پر ۸۰۰ روپیہ خرچ ہوتے ہیں - آپ عوام کے نمائندہ بن کر آئے ہیں - مجھے بڑی خوشی ہوتی کہ اگر اپوزیشن کی طرف سے جو ترمیم پیش کی گئی ہے ان میں سے ایک آدھ ترمیم میں بھی کام کی چیز ہوتی - ساری کی ساری ترمیم ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وقت کو— ذراؤں کو— وسائل کو ضائع کرنے کے لئے دی گئی ہیں - میں یہ بات عرض کرنا چاہتا ہوں کہ صدر جمہوریہ نے گزشتہ سال جو حکومت کے کاموں میں ترقی ہوئی ہے ان کا اپنے خطبے میں ذکر کیا ہے - اور آئندہ سال ہم کیا کرنا چاہتے ہیں اس کے بارے میں تفصیلی باتیں رکھی ہیں - میں ادب کے ساتھ یہ بات عرض کر دوں کہ کپڑا ملوں کی ہڑتال یا آسام میں جو آندولن چل رہا ہے اس کی بات کو یا جن میں علاقہ پرستی کا بہوت سر ابھار رہا ہے اسے ایک ہندوستانی کی حیثیت سے ہمیں دیکھنا ہے - میری مادری زبان اردو ہے، کسی کی مادری زبان تامل ہے - ہو سکتا ہے کہ زبان الگ ہو، ہو سکتا ہے کہ مذہب الگ ہو، لیکن ہم سب ملی جلی ایک کلچر کے باشندے ہیں، ایک معاشرہ کے، ایک سوسائٹی کے داعی ہیں - اور سوسائٹی کے داعی کی حیثیت سے ہمیں مادر وطن کی خدمت کرنی ہے - مجھے یقین ہے کہ صدر جمہوریہ نے جو خطبہ دیا ہے اس میں بنیادی قدروں کو مضبوط کرتے ہوئے امید ظاہر کی گئی ہے کہ یہاں کے تمام عوام اور کارکن اور نمائندے اپنے اپنے فرض کو نبھانے کی کوشش کریں گے - مجھے یقین ہے کہ جو ترمیمات اس خطبے کے متعلق پیش کی گئی ہیں انہیں اپوزیشن کے لوگ واپس لیتے ہوئے قوم کو تباہ ہونے سے بچائیں گے اور ہم شکر گزار ہیں صدر جمہوریہ کے اور مجھے یقین ہے کہ ہمارے ملک کی پردھان منتری شریمتی اندرا گاندھی کی رہنمائی میں نہ صرف ہم ملک کو اونچائی کی بلندیوں کی طرف لے جائیں گے بلکہ جو جنگ کے بادلوں سے ڈری ہوئی اور سہمی ہوئی انسانیت ہے اس ڈری ہوئی اور سہمی ہوئی انسانیت کو شریمتی اندرا گاندھی کی رہنمائی میں "جیو اور جینے دو" کے طریقۂ کار کو سمجھتے ہوئے ہم ایمانداری کے پرچم کو اٹھائیں گے اور ایمانداری کی طاقتوں کو مضبوط

[شری سید رحمت علی]

بلائیں گے - میں اپنے اپوزیشن کے دوستوں سے کہنا چاہتا ہوں کہ آج یہ بات صاف ہے کہ اس ایوان میں جو تنقیدیں ہوتی ہیں - میں ادب کے ساتھ یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ وہ تنقیدیں جمہوریائی نقطۂ نگاہ سے نہیں ہوتی ہیں - اس ایوان میں جو تنقیدیں کی جاتی ہیں وہ ہڑبونگ کی شکل اختیار کر لیتی ہیں اور یہاں کے نمائندے اس ایوان میں ہڑبونگ مچانے کے لئے آتے ہیں تو آپ ہی سوچئے کہ ایک ایسی کارکن کی حیثیت سے ہم کیا کر رہے ہیں اور پھر آپ کو حکومت پر نکتہ چینی کرنے کا ایوان میں اور ایوان سے باہر بھی اختیار ہے اور اس اختیار میں اگر آپ اپنے ہاتھوں میں تشدد کا پرچم لے لیتے ہیں اور اگر آپ تشدد پر اتر آتے ہیں تو میرے بھائی میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ آپ اس ہندوستان کو کس قسم کا دیش بنانا چاہتے ہیں میں آپ سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ آج آسام میں جو دنگے ہو رہے ہیں وہاں جو فسادات ہو رہے ہیں - وہاں جو اقلیتوں کو تنگ کیا جا رہا ہے - آج پنجاب کی سر زمین پر جو مجاہدوں کی زمین رہی ہے جہاں لوگوں کو خطرناک حالات سے گزرنا پڑ رہا ہے - کیا اپوزیشن کے لوگوں کو اس کے لئے دکھ ہے ؟ نہیں - وہ تو خوش ہیں اس بات پر اور وہ مسرت محسوس کرتے ہیں اس لئے کہ آسام جلتا رہے - پنجاب جلتا رہے اور وہاں ہنگامے ہوتے رہیں - کیوں ؟ اس لئے کہ ان کے دلوں میں وزارت کو پریشان کرنے کا جذبہ ہے اس کو تنگ کرنے کی بات ہے - اور وہ ایسا کر کے ہی وزارت کی گدی پر پہنچنا چاہتے ہیں - وہ حکومت کو تنگ اور پریشان کرنا چاہتے ہیں - لیکن شریمتی اندرا گاندھی دعوت دیتی ہیں ترقی کی طرف ، وہ ملک کو خوشحالی کی طرف لے جانا چاہتی ہیں - آپکے ساتھ لوگوں کو مصیبت کا جامہ پہنانا چاہتے ہیں - ہم ہندوستان کو ترقی کا راستہ دکھلانا چاہتے ہیں اور یہی وجہ ہے کہ ملک شریمتی اندرا گاندھی کی رہنمائی میں ترقی کر رہا ہے ، میں صدر جمہوریہ کا شکریہ ادا کرتے ہوئے انہوں نے جو راستہ بتایا ہے - چاہتا ہوں کہ ملک اس راستے پر چلے اور ہم اپنے مادر وطن کو خوشحالی کی منزل تک اس طرح پہنچا سکیں -]

DR. SARUP SINGH: Mr. Vice-Chairman, Sir, I feel a little confused in having to say a few words.

First of all, I want to assure Mr. Rah mat Ali that I am not pleased at what is happening in Assam nor am I pleased about what is happening in Punjab. Mr. Rahmat Ali, I am trying to address you and I want to assure you that I am quite unhappy about what has happened in Assam or what is happening there, and I am quite unhappy about what is hap pening in Punjab or may happen in Pun jab. Incidentally, you will be glad to know that when the dialogue was going on between the Akali Party" and some of. the Opposition parties and the Govern ment, my stand consistently was that we should find some kind of a solution and, in fact, a stage came when the Akali leadership was willing to accept my arbi tration on the question of Chandigarh. That, I think, will establish my *bonafides* and now I would like to say what I thought needs to be said. I know it is difficult, Mr. Vice-Chairman, to say it, but I will take courage in both hands and say it. All of us are talking about national integration. Is it geographical unity, or is it a unity of minds and hearts? We talk of composite culture. But where is that composite culture? Which ane of us really subscribes to that composite culture? Let us all search our hearts and see whether the situation to which we have now brought the coun try is the creation of one political party or of all political parties. My claim is—and I am not a politician; I have all along been an academic man and I stray ed into politics very recently but I have been watching this game all these years —and I am sad to say, Mr. Vice-Chair man, that all political parties have made their contribution and we have reached a stage where national integration has re mained only a slogan. It is not reality. Whether it is a question of language or it is a question of region or it is a question of religion, or it is a question of caste, have not all of us encouraged It in order to serve our poltiical ends? Unfortunately.—Mr. Jain, may I request you to listen to rne—can I came into politics is not relevant; what is relevant is whether what I am saying is true or it is not true. And, Mr. Vice-Chairman, one question I ask myself: If I wnre fighting an election today and I wanted to go to my area, what are the weapons that I should use to get votes? In Delhi University my caste was not relevant. My religion was not relevant. My region was not relevant. Only my academic competence was relevant. But the moment I come into politics, I discovered that my academic competence has not relevance, even my honesty is not relevant. What is relevant is to which caste I belong, to which region I belong and to what religion 1 belong. Is it because the people of this country have lost all faith in the unity of this country? I do not think so. I think that essentially an ordinary Indian still believes in the unity of the country. Then who is spoiling it? I am not saying that all the political parties are equally to blame. Some are more to blame; some are less to blame. But you cannot exonerate any political party in India. It is no use our shouting against this individual or that individual. Somebody makes an appeal in the name of region. What do you do to him? He asks for autonomy for his State. The Akalis also want autonomy for their State. Some other State also is asking for autonomy for itself. What then do we do? Shouting at them, telling them that they are enemies of the nation wil! not help. Let us sit together. Let us find out what the answers to our questions. Answers are available, Mr. Vice-Chairman. Unfortunately, when we search for answers, we ask two questions. First question is: will this answer suit my political party? Second question is: will this answer suit me? The country does not exist. It exists for nobody. Then where do we go? Therefore, I say with humility, I appeal to you with great respect, for all of you—I say this: Please change the political culture which has emerged, because this political culture will destroy us. We are passing through a phase where no petty thin-king will solve any of our problems. I say, Mr. Vice-Chairman—I hope I will not be misunderstood—have a national government, of the best people who are available in the country, and put them in a position of responsibility and authority, so, that they can inspire confidence

[Dr. Sarup Singh]

amongst the people and then think of all the people combined together, and not of any region or religion or caste; they can even put them down.

It was a good thing, Mr. Vice-Chairman that the Government of India decided that some opposition parties should also talk to the Akalis. And let rne tell you that we did find some answers. And let me also say that the Akali team was extremely reasonable. They did not want to create Khalistan. They had their problems which. they placed before us in reasonable manner. And I am glad to say that all the political parties and the Government group listened to them and we tried to see how their problems could be solved. Unfortunately, the thing broke down on a very minor point. I hope the Government is considering that and I also hope that the Government will very soon take a decision and announce the decision because it is no use keeping these things pending. When things are drifting, bitterness increases, misunderstanding increases and extremist elements come on top. Unfortunately, today, throughout the country, the extremist elements are coming on top. And extremist elements and democratic values do not go together. What do we do then? I mentioned the national Government. I know that it will not be accepted. It will also be said that if we have a national government every political party will try to pull in its own way and the integrity of the country might be hurt even more. But I am merely throwing up the suggestion. And I am saying that people of goodwill from all groups sit together, gi re thought to the questions which are confronting us. I agree with Mr. Rahmat Ali. He quoted the famous lines from Iqbal :

"वतन की फिक्र कर, नादान मुसीबत आने वाली हैं,
तेरी बर्बादियों के मशवरे हैं, आसमानों में।"

I am going to add, not only in "assmanon men" but on our earth, this earth on which we walk, everywhere there is danger. Somewhere there is violence; somewhere there is social anger. And don't ignore social anger. After all, violence is also born in a certain atmosphere. If the people feel that their problems cannot be solved in any way, they think that they should necessarily indulge in violence. I was the only member of an opposition party who told the Akalis, "Why do you every time insist on getting decisions taken on the point of a bayonet?" I said, "Why can't you talk in a pleasant manner?" And one of them told me over a cup of tea, " It is because the Government would not listen to us unless we use that kind of language. This is happening everywhere. Whether it is workers, whether it is teachers or whether it is certain groups, in various States everywhere people are angry. Let us go into the nesis of this anger, ls it the economic situation? Is it something political? Is it some foreign propaganda or whatever? Go into that. Men of goodwill should sit together because people remember one thing. The aim of politics is not merely to win the elections. Win the elections. All right. And I do not mind who wins the election. I demand only one thing that let the country go on peacefully forward, make progress, become strong and remain united. It is immaterial for me which political party achieves this purpose for me. But if a political party cannot achieve this, then where do I go? I say to all of you then. For God's sake do not start getting angry against each other. I have been watching all kinds of things happening here. Somebody accuses so and so and the other accuses the other party. You know that these accusations and counter-accusations take us nowhere. Parliament is not the place where we come to score points over each other. No. Score the points. Yes. You may do so and you can satisfy yourself that you have achieved something very big. But that is not really what we are here to find answers to problems which are becoming very difficult and to which no easy answers are available. Our options are closing. Very few options are avilable. And time is the great factor. Each one has to prevent these so called divisive force caking over, If we want to prevent it, then do something about it. Try to understand why they are flourishing, why communalism is flouri-

suing in the country, why regionalism is flourishing in the country. Is something wrong with our functioning? I presume there is. If there was not, then these forces would not certainly rise here and there.

Therefore, do not get angry about this. In sadness and with sobriety and with openmindness and with honesty and with patriotism let us consider these questions. Patriotism is nobody's monopoly. Everybody is patriotic in his own way. Let us not challenge anybody's patriotism. I am sorry Mr. Mohanarangam is not here I would have told him that regard Tamil as dear a language as any other in the sense that it so happens that my daughter-in-law comes from Tamil Nadu. How do I live in the house if I do not respect Tamil culture, if I do not respect Tamil language? That is an incident. After all, all these languages are ours, all these regions are ours. But do we have an all India out look and do we regard them as ours? We come here either to represent our State because this is the Council of States. That is the maximum that we do. Or we represent our district, or we represent our constituency. Can't we say that the whole country is our constituency? No, we would not say that. However, we will shout at each other. This man is the enemy. I say all of us are enemies, including me. I wish I were younger. I wish I had the kind of fighting spirit that some of you haw. But I say that the country I knew is disappearing. The country in which I was born and brought up that country is ceasing to exist. All around there is either fear or nervousness or greed or corruption and violence and what not. Let us not shut our eyes against it. It is not a reflection on the Government alone. It is a reflection on the society. We can mould the society. But are we trying to mould the society?

I am not very sure, at least I am not wholly sure whether all of us are trying to transform this society into a liberal civilised humane kind of society where all composite cultures can flourish. I do not see the evidence of it. In the President's Address he has made a few general remarks about this. But what else could he do? After all, he read the speech that was given to him. But serious thinking has to be done by the Government, the ruling party, which is the most important party in the country. Because remember this that if Congress fails the country also fails. And I speak as a man of the opposition because you have all the authority. You have also resources. Unless you change your outlook to this extent that the Congress is not important but the country is important, things will not change. If you can have that outlook well and good. If you cannot have that attitude, then what I have been saying is of no use.

One thing more, Mr. Vice-Chairman, and then I will finish. In fact, I usually do not take more than ten or fifteen minutes. But when I want to take a few more minutes always there is a bell and I do not like the bell being rung. I am not one of those persons who continue speaking even when the bell is ringing, because I am used to finishing the class when there is the bell. That is the old habit. I will say only one thing more and that will be about education.

He has written one sentence here only one niggardly sentence about something that concerns the nation. How does a nation grow? How does it become strong? How does it become enlightened? How does it become great? Where are the roots of a nation? In education? And here is that great sentence. "Programmes and strategies for improving the quality of education eradicating adult illiteracy and universalising elementary education in the age-group 6 to 14 continue to receive high priority with equal emphasis on the education of girls." I am handicapped because unfortunately our Minister for Education has suffered bereavement very recently and our sympathies go to her. And I am a great admirer of this lady's gentleness, goodness and all-India outlook. It is not a question of a Minister. It is a much larger question. I do not see any priority frankly speaking in our strategies or in our programmes as regards education. In fact, we seem to have reached a stage where we have come to the conclusion that education we leave alone. Some of them are bound to get proper education. Others would not get proper education. But that is a different matter.

[Dr. Sarup Singh]

In the rural areas, let them face the kind of music which is being made available to them. We say all kinds of things about the poorer sections of the society. But the fact is that if they were not voters, we would not even think of them. We think of them only because they are the voters. I remember a cartoon, Mr. Vice-Chairman, which appeared in the *Times of lndia* many years ago, where a politician goes to a certain village. A lady comes from her house with a baby in her arms. The politician looks at the baby and says 'Oh, you are the future voter of India'. This is because we think only in terms of votes. What do we do with the children who are being born? What do we do with the children who are going to school'? What do we do with those who have gone to the universities? It is a question of quality. Quality means excellence. Our university system is crumbling.

I have made an appeal again and again to different Ministers of Education who have come during all these years. We have had, I think, four or five Ministers. I began with the Janata. Then came the second one, the third, fourth, fifth and so on. Each time, my appeal has been that whatever the political parties may continue to quarrel about education at least is not a matter about which they need to quarrel. At least, this is totally a non-political question. But will the political parties accept it? No. Universities are also the battle-field where the politicians must capture the minds of young men. But unfortunately, what they are capturing are only the anti-sociai elements. And these anti-sociai elements travel into politics. Sooner or later, you know what will happen to our politics.

Again, it is the same question. It is a qnestion of our political culture because nothing is sacred for us. Nothing is sacred. Neither in education, nor in anything else. What does one do in this kind of a desperate situation? Therefore I appeal. I appeal to whoever is here, to listen to this, whether on this side or on that side. If you are really serious about saving this country from disintegration and if you are interested in building this country into a great nation, strong, united, enlightened and modern as well as a progressive nation, if you are really interested in this, then stop this petty quarrelling. Sit together. Whoever you decide to call, call them. Find answers. Forget for sometime as to how you are going to win the elections or whether you are going to lose the elections. In fact, I do not want to say it. But it seems to me that we have reached a stage where for sometime, the situation needs to be frozen so that this country can discover ways of survival.

Last thing about population control. I am worried about it. Unfortunately, I have more children than I should have had. But I belong to a generation where this question was not relevant. Luckily, my children are controlling their families because they are intelligent people, educated people. Do you realise population is a very serious problem? What is being done is presumably all right. Some of the slogans that I hear on the radio and the television are not terribly intelligent. But anyway, there they are. Incidentally, you will be glad to know, there is some kind of a silent censorship on me as an individual. I cannot go to the radio. I cannot go to the television. I was shocked to learn—I can understand this in my case— that even my distinguished friend, Dr. Malcolm Adiseshiah, is not given as many opportunities as he should have been to appear on the television and the radio. He says he is given opportunities when he goes to Madras. *{Interruptions)* Perhaps, Mr. Khushwant Singh has also been dropped now. When you are discussing education, there is no harm if you mvite Dr. Adiseshiah. As far as I am concerned, I agree. You cannot invite me, because, my difficult is that I cannot hlep saying what I feel even though sometimes it may be unwelcome. There is a play, Mr. Vice-Chairman^ which, I think, everybody io this House needs to read. That play was written ki the 19th century by a gentleman named Ibsan. The play is called "The enemy of the people', where that man speaks truth and everybody scorns him because he had spoken truth, and ultimately the man had to leave the town, everybody says him the enemy of the

people. We are reaching a stage where a decent man and a truthful man will be described as an enemy of the people and when you reach that Stage what happens to that great nation about which we continue talking in very glowing terms? We start our history or culture or civilization from those ancient times when this country produced great men and women, but today we are growing smaller in size. Education is one way of doing it and 'he political style is aonther way of doing it. Unless the political style is different, even education will not grow.

Thank you very much,

DR. MALCOLM S, ADISESHIAH (Nominated): Mr. Vice-Chairman f rise to offer some comments on the first part of the President's Address which summarises and gives in a nutshell the state of the economy of the country which is dealt with at greater length in the Economic Survey which we all received yesterday. The first part of the President's Address also deals with the Plan and ihe revised 20-point programme as the second part. The third is health and family planning. The fourth is, as my friend Sarup Singh said, education, dealt with briefly; the fifth is science and technology, and the sixth is welfare of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes and workers. Mr. Vice-Chairman, I would like to use aU this documentation the President's Address and the Economic survey, in order that we look at where we stand today. We have just now completed the midterm of the Sixth Plan period, *i.e.* 1980 to 1985. During these five years we gave ourselves the following 7 objectives or targets. One, overall. The economy was to grow every year at 8.2 per cent of GDP. The per capita income of the people was to grow at 3.28 per cent and the per capita consumption at 2.7 per cent. The second objective was that in the public sector

would invest Rs. 97.500 crores, and in the private sector Rs. 74,710 crores, all at 1979-80 price. The third objective was that our agriculture would grow at 4 per cent per annum. The fourth objective was ihat our manufacturers are to grow at 7.7S per annum. The fifth, the infrastructure, namely railways, electricity, coal petroleum products and irrigation was to grow apporpriately. The sixth, the balance of trade deficit was to be kept down to Rs. 17,000 odd crores and the balance of payment deficit down to Rs. 9,000 odd crores. Finally, the end purpose of I his Sixth Plan was to reduce poverty by bringing 100 million people above the poverty line during these five years, through (1) creation of 32 million standard person years of employment and (2) redistribution of 5 per cent of our surplus land. May I say to my colleagues who follow this that this five per cent of surplus land seems to be very small but if it was done it means we would have redistributed more land in five years than since we became independent? Now again these 7 objectives that we gave to ourselves, at the end of 2-1/2 years, nearly 3 years, of the Plan, let us see where we stand. At the end of the first three years we find that the economy has grown at 4.8 per cent of GDP. The Economic Survey which says that the growth has been at 5 per cent refers to GNP, in terms of gross national product. It means that we are

0.4 per cent below the tar-5 P.M. get. Per capita has grown at

7.8 per cent which is too close to the population growth. The per capita income is 2.8 per cent. Population growth is 2.2 per cent. You only get 0.6 per cent growth taking place and the per capita consumption alone is 1.26 per cent.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI LADLI MOHAN NIGAM): You can continue tomorrow. We shall now take up Calling Attention Motion.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

The reported collapse of some Residential flats newly built hy tbe Delhi Development Authority in Vikaspur! and other Areas in Delhi and the Action Taken by Government in the matter

श्री सत्यपाल मलिक (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मैं दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा दिल्ली में विकासपुरी तथा अन्य क्षेत्रों में बनाये गये आवासीय फ्लैटों के ढह जाने के समाचार तथा इस मामले में सरकार द्वारा की गयी कार्यवाही की ओर संसदीय कार्य, खेल और निर्माण तथा आवास मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं ।

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH- Sir, on 20-8-1982 aportion of a building under construction in Mayur Vihar developed cracks and some portions gave way. To aviod danger to human life and workmen in .and around this area and for the safety of the structure, half of the block 'was pulled down. Inquiry conducted into this revealed that it was mainly due to improper drainage around the buildings which resulted in development of cracks in the walls. The work of reconstructing the building had been undertaken by the contractor, who also accepted the responsibility for the failure. The work of reconstruction has since been completed.

On 7-11-1982. the RCC roof and floor of a portion of one unit out of 64 houses which were under construction in Greater Kailash-I, collapsed resulting in the death of one person and injuries to two. The officers of the DDA under whose supervision the work was carried out, were transferred and departmental action initiated. The question of penalising the contractor has also been taken up. The enquiry conducted into this incident revealed that the collapse occurred due to inadequate design and poor quality of mortar. The collapsed portion is being reconstructed after taking necessary strengthening measures.

A portion of a block (No. C-2) of a four-storeyed MIG house im Vikaspuri collapsed on 28-12-1982 while the work was in progress. Some further portion came down on 30-12-1982. There was ao loss of life. Immediately after this mishap an Expert Committee was constituted to inquire into the causes. Simultaneously, samples of mortar and other materials were taken and it was found that the mortar did not contain adequate quantity of lime, nor was it properly mixed. On the basis of the preliminary findings and *prima facie* evidence, the Executive Engineer, the Assistant Engineer and the lunior Engineer incharge of the work, were placed under suspension pending results of the inquiry by the Expert Committee. The DDA has also set in motion the process of action to rescind the contract. The contractor has also been barred from taking further works.

On 29-12-1982, the outer wall of two Janata houses *ia* Avantika near Mangolpuri collapsed due to erosion of wall foundation by a deep storm water drain under excavation. This took place diie to accidental puncturing of the water main near the drain and accumulation of large quantity of water in the drain. The Junior Engineer and the Executive Engineer in this case were transferred for their failure of supervision.

On 16th January, 1983, the roof of a higher secondary school building on the first floor under construction in Paschim Vihar collapsed. In this mishap, one woman who was engaged by the contractor, fell along with the roof and died. A magisterial inquiry was • ordered by the Lt. Governor into this incident". A First Inormation Report was also lodged by the Delhi Development Authority.

Sir, a fact finding Committee was also constituted by the Lt. Governor, Delhi, who is the Chairman, DDA to review